संजय की कलम से ..

भागें नहीं, बदलें

जब मनुष्य किसी परिस्थिति का सामना नहीं कर सकता है तो वह वहाँ से भाग जाना चाहता है। यदि किसी व्यक्ति ने कोई कड़ी भूल की हो अथवा कोई पाप किया हो तो वह भी वहाँ से भाग खड़ा होता है और सामने नहीं आना चाहता।

कुछ लोग घर-गृहस्थ की परिस्थितियों को सुधारने में स्वयं को असमर्थ पाकर, वहाँ के वातावरण को दु:खद मानकर कर्त्तव्य कर्म को छोड़ देते हैं और हाथ पर हाथ रखकर केवल 'राम-भरोसे' बैठ जाते हैं। जीवन के इस दृष्टिकोण को 'पलायनवाद' कहा जाता है। कर्म-संन्यासी लोग इसी वृत्ति के ही अधीन होते हैं। जिस बुराई से घर-गृहस्थ में दु:ख होता है, उसे छोड़ने के बजाए वे घर को ही छोड़ देते हैं।

ऐसी वृत्ति वाला मनुष्य छोटी-छोटी बातों में घबराहट से पीड़ित रहता है। जहाँ परिस्थिति थोड़ी भी असामान्य हुई, वहाँ उसका हृदय धक-धक करने लगता है। जब कोई बड़ा कार्य सामने हो तब उसके हाथ-पाँव फूल जाते हैं या वह कोई-न-कोई बहाना बना कर भागने की बात सोचने के कारण तनाव में आ जाता है। कोई छोटी-सी भी परिस्थिति सामने आये तो वह उसे 'मुसीबत' मानने लगता है। उसमें सहनशीलता, स्थिरता और मनोबल विकसित नहीं हो पाते।

पलायनवाद के इस अनियन्त्रित और गलत प्रयोग की बजाय हमें इसका सदुपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि हम सत्कर्मों से नहीं बल्कि बुरे कर्मों से भागें। हम अन्य किसी से न डरें बल्कि परमात्मा से, धर्मराज से डरें। यदि हमारे कर्म अच्छे होंगे तो हमारा कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तब हमें परमात्मा से भी डरने की ज़रूरत नहीं बल्कि उससे प्यार करने की ज़रूरत है। परमात्मा से 'डरने' का अर्थ उस प्रियतम को सामने रखकर पाप-कर्म से बचना है वर्ना भय से तो दमन ही होता है, शिक्षा नहीं मिलती। यदि परमपिता परमात्मा से हमारा नाता (योग) ठीक होगा तो हमारे कर्म भी अच्छे होंगे और हमें सफलता भी मिलेगी।

हम में 'लोक-लाज' भी अच्छे ही लोगों से होनी चाहिए। जो देह-अभिमानी एवं विकारी लोग हैं, वे तो हमें भी अच्छाई की ओर बढ़ते देख कर ईर्ष्या-वश हम पर अट्टहास अथवा व्यंग करेंगे। हमें उनके द्वारा बहिष्कार होने के भय से स्वयं को अच्छे मार्ग से नहीं हटाना चाहिए बल्कि हमें अच्छे लोगों से झेंपना चाहिये कि हम कोई ऐसा बुरा कर्म न कर बैठें कि हम उनके बीच अपमानित हों या उनकी नज़रों में गिरें। ❖

अमृत-सूची

- भूतकाल में मत भटकिए *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- विदेश में ईश्वरीय सेवा 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 10
- मम्मा ने ही मुझे योग सिखाया .11
- सरस्वती जगदम्बा माँ *(कविता)* 12
- अतीत के झरोखे से 13
- वही शिव भगवान ...*(कविता)* 14
- ज्ञान की देवी माँ 15
- चक्रव्यूह से सावधान 17
- बाबा ने ब्रेन की बीमारी 19
- बाबा ना मिलते तो 20
- पके बाल 22
- कुछ ऐसा कर जाऊँ *(कविता)* 23
- स्नेह संस्मरण 24
- मर्यादाओं का उल्लंघन 26
- सचित्र सेवा समाचार 27
- ऐसा निश्छल नि:स्वार्थ प्रेम ...28
- क्रोध नहीं क्षमा 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- मोटरसाइकिल और बाबा 32
- रहम करें पेट पर 33
- आखिर संगठन की 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

भूतकाल में मत भटकिए

हम में से कई आमतौर पर सुबह गुनगुना पानी पीते हैं। यदि थर्मस में पहले का ठण्डा पानी पड़ा हो तो उसे फेंककर नया पानी भरते हैं। यदि पुराने पानी पर नया पानी डाल दें तो नए की गुनगुनाहट समाप्त होने की सम्भावना रहती है। विचार भी ऐसे ही हैं। यदि नए विचारों को मन में भरने से पहले, पुराने विचारों से मन को खाली ना करें तो नए विचारों के तरोताज़ापन में कमी आ जाती है। नए की नवीनता और चमक तभी स्पष्ट दिख सकती है जब उसको पुराने के प्रभाव से बचाया जाए। यदि हम पुराने पानी को फेंकना नहीं चाहते तो ऐसा कर सकते हैं कि उसे अलग से थोड़ा गर्म करके फिर इस नए में मिला लें तो नए जल की गुनगुनाहट में अन्तर नहीं आएगा। इसी प्रकार यदि पुराने विचारों को फेंकना नहीं चाहते तो उन्हें भी नवीनता के रंग में रंग लें। फिर वे नए विचारों के साथ मेल-मिलाप कर लेंगे। यदि पुराने विचार भौतिक थे, सांसारिक थे, विकारों में रंगे थे, तो उन्हें और उनसे जुड़ी घटनाओं, व्यक्तियों को आध्यात्मिक स्वरूप देकर उस नए रूप में देखना, जानना, व्यवहार करना शुरू कर दीजिए। इससे नए-पुराने का सामन्जस्य स्थापित हो जाएगा। पीछे खींचने वाला भूतकाल ऊपर चढ़ने की सीढ़ी बन जाएगा।

आगे बढ़ने के लिए पिछला छोड़ना अनिवार्य

प्राप्त का जितना त्याग करेंगे, उतना आगे बढ़ेंगे। जैसे एक तैराक पानी को पीछे धकेलता जाता है और आगे बढ़ता जाता है। हमें जो प्राप्त हो रहा है उस में खो ना जाएँ बल्कि उसे देकर, बाँटकर आगे बढ़ते जाएं। जो प्राप्त है उसे पकड़कर बैठ गए तो वहीं जाम हो जाएंगे, आगे नहीं बढ़ पाएंगे। **यदि हमें छत पर जाना है और पहली सीढ़ी पर पैर रख लिया है तो यह ज़रूरी है कि उस पहली सीढ़ी का त्याग कर दें, तभी तो अगली तक पहुँचेंगे। एक के बाद एक का त्याग करना ही होगा, तभी छत पर पहुँच पाएंगे अन्यथा वहीं यानि पहली सीढ़ी पर ही खड़े रहेंगे। ईश्वर की ओर कदम बढ़ाने में पुराने देह, देह के सम्बन्धों की सीढ़ियाँ तो छोड़नी ही पड़ेंगी। उन्हें पकड़े-पकड़े परमात्मा पिता को कैसे पकड़ पाएंगे। केवल सीढ़ी पर चढ़ने का ही नहीं, ज़मीन पर चलने का सामान्य नियम भी यही है। हम पिछला कदम उठाते हैं, उसके नीचे की ज़मीन को छोड़ते हैं तब आगे बढते हैं। अतीत की अनावश्यक स्मृतियाँ ही वह ज़मीन है जिससे बुद्धि रूपी पाँव को हटाना जरूरी है।**

लिखे हुए पर पुनः लिखना असम्भव

यदि हमारे पास अखबार का या किसी किताब का ऐसा पन्ना है जिस के दोनों ओर गहरे-गहरे अक्षर लिखे हुए हैं तो उस भरे हुए कागज़ पर कुछ भी नया लिखना असम्भव होगा। पुरानी स्मृतियों से, पुराने संस्कारों से भरी आत्मा पर भी कुछ नया लिखना लगभग असम्भव होता है इसलिए पुराने, अनावश्यक, नकारात्मक, अज्ञान से भरे कर्मों की स्मृति को मिटाना परम आवश्यक है।

सार ग्रहण करें और आगे बढ़ें

जब हम कोई फल खाते या चूसते हैं तो उसका गुदा (सार) हमारे पेट में चला जाता है और गुठली को फेंक कर हम आगे बढ़ जाते हैं। क्या कुछ दूर जाकर हम उस फेंकी हुई झूठी गुठली को उठाने आते हैं? नहीं ना। उसे तो सारहीन, व्यर्थ समझकर हम फेंक चुके, फिर उससे मोह क्यों? भूतकाल भी ऐसा ही है। भूतकाल में जो हुआ उससे सीख ग्रहण करके, उससे सार ग्रहण करके ही तो हम यहाँ तक आए हैं, फिर पीछे मुड़-मुड़कर क्यों देख रहे हैं।

चीज़ों की तरह बातें भी हो जाती हैं प्रचलन से परे

बहुत सारी बासी चीज़ें, पुरानी

बातें हम बहुत जल्दी बदल लेते हैं या फेंक देते हैं और ज़माने के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का प्रयास करते हैं। एक ज़माना था जब लोग रात का बना बासी खाना खा लेते थे पर अब जान गए हैं कि ऐसे खाने से बीमारियाँ हो जाती हैं इसलिए उसे फेंक देते हैं। पहले पीतल-कासी के बर्तनों में खाना खाया जाता था पर अब ये पुराने फैशन के बर्तन घरों से निकल चुके हैं और नए ज़माने के स्टील, कांच या प्लास्टिक के बने बर्तन घरों की शोभा बढ़ा रहे हैं। माताएं-बहनें जिन भारी-भारी घाघरों को पहनती थीं अब वे भी कहीं नज़र नहीं आते। उनका स्थान नए जमाने के सलवार, कमीज़, पेंट, साड़ी ने ले लिया है। हमने अन्य भी कई प्रकार की चीज़ों को आउट ऑफ फैशन मानकर उनसे पीछा छुड़ा लिया परन्तु सवाल यह है कि बातों का फैशन भी तो बदलता होगा, वे भी तो पुरानी होती होंगी। फिर हम उन पुरानी बातों और पुरानी स्मृतियों को क्यों छाती से चिपकाए बैठे हैं? उन्हें भी पुराने ज़माने की समझकर फेंकिए और उनके स्थान पर नई स्मृतियों को भर लीजिए।

जब हम छोटे थे, हमारे पहनने के कपड़े छोटे-छोटे थे। हम बड़े हुए तो वे अपने आप छूट गए। अब कोई दिखाए तो भी मुस्कराकर उनसे मुँह फेर लेते हैं। जैसे शरीर के बड़े होने पर बालपन के कपड़े छूट गए इसी प्रकार मन के अनुभवी, ज्ञानी, समझदार होने पर बालपन की बातें, वे अनुभवहीन स्मृतियाँ, वे देहभानवश की गई भूलें भी तो पीछे छूट जानी चाहिएँ और उनके स्थान पर आज की मन:स्थिति के अनुकूल ज्ञानयुक्त बातें स्मृति में रहनी चाहिएँ। उम्र के आगे बढ़ने के साथ-साथ ज्ञान और समझ भी तो विकसित होने चाहिएँ।

स्व-परिवर्तन ही सही पश्चाताप

कई बार भूतकाल की कोई गलती हमें बार-बार कचोटती है। हमारा मन बार-बार उस की गई गलती वाले स्थान पर जा खड़ा होता है और गलती का पुन: पुन: स्मरण कर दुख और पश्चाताप में डूबता है। परन्तु ऐसा करने से गलती ठीक में बदल जाती है क्या? मान लो हमारा पाँव कीचड़ में डल गया, कीचड़ में सन गया तो क्या हम पुन: कीचड़ के पास जाकर, पाँव को उसमें डालकर अफसोस करते रहें कि हाय, पांव को कीचड़ लग गया या फिर जूते और पाँव से कीचड़ को पोंछकर पहली स्थिति में आ जाएँ और सुकून महसूस करें। यदि कीचड़ सने पाँव को स्मरण करेंगे तो दर्द झेलेंगे और पोंछे हुए साफ-सुथरे पाँव को बार-बार देखेंगे तो आत्मविश्वास से भरेंगे। सही पश्चाताप है स्व का परिवर्तन कर लेना।

मिटाये जा सकते हैं पुराने निशान

कई लोग सवाल उठाते हैं कि गलती जब की थी तब हम अनजान थे, समझ की कमी थी, बाल बुद्धि थी, कर्मों की गहन गति का ज्ञान नहीं था, आज जब समझ आई है तो वह कर्म गलत था, यह अहसास बार-बार हो रहा है, पर क्या उसे मिटाया जा सकता है? क्या पड़े हुए निशान, लगाई गई लकीरें मिटाए जा सकते हैं?अध्यात्म कहता है, हाँ, ऐसा हो सकता है। परमात्मा की यथार्थ, एकरस, गहन स्मृति उन लकीरों और निशानों को मिटा सकती है। यदि साइन्स के बल से किसी चीज़, स्थान यहाँ तक कि व्यक्ति के रूप को भी बदला जा सकता है तो साइलेन्स बल से भी पूर्व में किए गए कर्मों का रूपान्तरण हो सकता है। उन कर्मों की स्मृति के स्टाक को खाली किया जा सकता है और उनके स्थान पर श्रेष्ठ कर्मों की स्मृति को भरा जा सकता है। जैसे हाथों पर लगी गन्दगी धोने से हाथों का कोई नुकसान नहीं होता इसी प्रकार मन-बुद्धि में भरी पाप कर्मों की स्मृति को विस्मृत करने और उसके स्थान पर श्रेष्ठ कर्मों की स्मृति भरने से भी कोई नुकसान नहीं होता। भूतकाल मृत है और भविष्य अजन्मा है। जीवित तो केवल वर्तमान है। इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है, गुज़रे हुए का जिक्र न कर, आने वाले का फिक्र न कर, प्राप्त हुए का फख़्र कर।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ...

– सम्पादक

प्रश्नः- पास विद् ऑनर में आना है तो किन बातों पर ध्यान दें?

उत्तरः- सिर्फ अपना समय और संकल्प सफल करें। समय कहता है, जो करना है अभी कर ले। कभी कल नहीं कहना। कल करेंगे या शाम को करेंगे, वह भी नहीं। जो करना है अब कर ले। क्या कर ले? जैसे पत्नी, पति के साथ डोर बांधती है, ऐसे हमने भी बाबा के संग डोर बांधी है। हमको बाबा ने सम्भाला है। हमको कभी शक नहीं हुआ है कि कौन सम्भालेगा। अन्तकाल तक बाबा सम्भालेगा। अन्तकाल ज्ञान अमृत मुख में हो, सभा के बीच में बैठे, बाबा-बाबा सुनते-सुनाते आत्मा शरीर छोड़े। इसके लिए तैयारी पहले करनी है, एवररेडी रहना है। पास विद् ऑनर में आना है तो लिस्ट निकालो, चारों सबजेक्ट्स में पूरा ध्यान हो। सिर्फ ज्ञान नहीं, ज्ञान कहता, तेरा योग कहाँ है? योग कहता है, तुम्हारी धारणा कहाँ है? बहुत काल से बाबा के सिवाए कोई याद न आये। याद आने के कई कारण होते हैं जैसे मेरे को कौन सम्भालेगा! अगर यह बात याद रही तो बाबा याद नहीं है।

पास विद् ऑनर में आना हो तो सोचो नहीं। माइन्ड सेट हो, बुद्धि स्थिर रहे, अडोल-अचल स्थिति रहे, बाकी सोच में टाइम नहीं गंवाओ। कोई भी हलचल में आना शान नहीं है। पास विद् ऑनर में आने वाला कभी हलचल में नहीं आयेगा। भले कुछ भी हो जाए, हमें ऐसे रहना है। कौन हूँ, किसका हूँ... हनुमान जैसा, अंगद जैसा हूँ। अंगद ज़रा भी हिला नहीं। हनुमान ने कहा, मेरा दिल खोलकर देखो, कौन मेरे दिल में बैठा है। ब्रह्मा बाबा के मुख से कभी 'मैं' नहीं निकला। पास विद् आनर में आना हो तो न मैं, न मेरा। जैसा मेरा बाबा है, ऐसी अपनी स्थिति बनानी है।

प्रश्नः- नुमाशाम के योग का क्या महत्व है?

उत्तरः- एक बार बाबा ने सन्देश भेजा था, अपनी स्थिति निर्विघ्न रहे, सेवा भी निर्विघ्न रहे और जो हमारे साथ रहते हैं वे भी निर्विघ्न स्थिति में रहें, इसके लिए शाम को 7 से 7.30 बजे तक योग जरूर करो। इसका बहुत फल मिलता है, बल मिलता है। फल यह है जो निर्विघ्न स्थिति रहती है। विघ्न आयेंगे पर याद की यात्रा से पार हो जायेंगे। नुमःशाम का समय साइलेन्स में रहने का है।

प्रश्नः- मायाजीत बनने का क्या पुरुषार्थ है?

उत्तरः- माया कितने प्रकार से कहाँ-कहाँ से छिप करके आती है, कभी तो पता भी नहीं चलता है। संकल्प, स्वप्न में भी माया न आए, तो मायाजीते जगतजीत बनें, तब जगत की सेवा कर सकें। तीसरी आंख खुली हुई हो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। सेवा भी करते रहो, विकर्म भी विनाश होते रहें, हल्के भी होते जाओ। सिर भारी तो नहीं होता है? भारीपन कभी न आए इसलिए खुराक अच्छी हो, एक्सरसाइज़ अच्छी करें। बाबा जो खिलाता है, चबाकर खाओ, अच्छी तरह मंथन कर हज़म करो। कभी

मुरली मिस नहीं करना। हमें मुरली सुनते-सुनाते अपनी जीवन-यात्रा पूरी करनी है। संगमयुग का जितना समय है, शान्तिधाम जाने की यात्रा पर हैं, यात्रा पर बहुत खबरदार रहते हैं। जाना है तो कर्मातीत बनना है, फिर सतयुग में आने के लिए सम्पूर्ण बनना है। कोई हिसाब-किताब कहाँ न हो।

प्रश्नः- तीव्र पुरुषार्थी की सेवा क्या है?

उत्तरः- तीव्र पुरुषार्थी कभी किसको धक्का देके आगे नहीं जाता, सभी इकट्ठे चलें। बाबा एक है, चलो बाबा के साथ। सेवा के जितने भी डायरेक्शन मिले हैं, बाबा के डायरेक्शन अनुसार सेवा की है, साथ-साथ सेवा करते-करते स्वयं की सेवा, पहले आप। पहले आप, कोई बेचारा तन-मन से ठीक न हो, फट से उसको ठीक कर देना, यह भी सेवा है। आप समान बनाने की सेवा, सहयोगी बनाने की सेवा, बहुत सेवायें हैं। सेवा में मैं भी खुश रहूं और सभी खुश रहें। मेरे कारण किसी की नींद फिटी तो वह भी जमा के खाते से चला जायेगा।

प्रश्नः- बाबा की स्वतः याद बनी रहे, यह कब होगा?

उत्तरः- बाबा की एक भी अच्छी बात जीवन में लाते हैं तो बाबा की याद बनी रहती है। बाबा की बात या चरित्र सामने आते हैं तो वह जीवन में साथ देते हैं। शरीर को भी कुछ होता है तो हमको उसके लिए बहुत सोचना नहीं है, जो शरीर को ज़रूरी है वह डाक्टर जाने, मुझे चिंतन नहीं करना है। ड्रामा में यह भी अच्छा पार्ट है, जो कोई चिंतन, कोई फिकर नहीं है। सदा आदि से ध्यान रहता है कि मेरा अन्तकाल अच्छा हो। बाबा की याद क्या है? बाबा के बोल, बाबा के चरित्र और जो बाबा ने पर्सनल मेरे को कहा है, उसे याद करो तो योग लग जायेगा। एक बार मैंने कहा, बाबा, आप जानीजाननहार हो। बाबा ने कहा, बच्ची, यह भी भक्ति मार्ग है। मैंने कहा, बाबा, आप मेरे से ठगी नहीं करो। तो हमारा विश्वास ऐसा हो जो अभिमान खत्म हो जाए। कइयों में सूक्ष्म अभिमान है, जो अच्छा नहीं है, अब अन्दर जाकर अपनी जांच करके अभिमान से मुक्त हो जाओ।

प्रश्नः- साकार बाबा के दिये कुछ वरदान सुनाइये।

उत्तरः- एक बार कराची में बाबा सीढ़ी पर बैठा था, बाबा ने कहा, बच्ची, पांव सामने करो, हम 5-6 बहनें थीं, सबने पांव सामने किया तो बाबा ने कहा, देखना बच्ची, तुम्हारे ये पांव पूजे जायेंगे। कदम-कदम में कमाई होगी। उस समय तो सेवायें कुछ भी नहीं थीं। लेकिन ये बाबा के शब्द कभी भूले नहीं हैं। बाबा ने कहा है, बच्चे, बहुत वृद्धि होगी, गली-गली में सेन्टर होंगे, उस समय तो कुछ भी नहीं था। ऐसे कितने शब्द बोले हैं, जो साकार हुए हैं।

बाबा ने एक बार बहुत अच्छी मुरली चलाई। फिर पूछा, बच्ची, कुछ कहना है। पहले मैं बाबा से बहुत कुछ पूछना चाहती थी। मुरली सुनने के बाद मैंने कहा, बाबा, आपने तो मेरा गला ही बंद कर दिया, फिर पूछते हो, बच्ची, कुछ पूछना है। तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारे सामने भी जो आयेगा उसका गला बन्द हो जायेगा। शुरू से मुझे था, और कोई मुझे पसन्द करे या न करे, भगवान मुझे पसन्द करेगा। भगवान का एक-एक महावाक्य इतना सत्य है, सिर्फ सोचो नहीं, याद करो तो सत्य मार्ग पर चलना शुरू हो जायेगा।

प्रश्नः- किसी स्थान पर भूत होने का अंदेशा हो तो क्या करें?

उत्तरः- कई स्थानों पर भूत वार करते हैं, कहते हैं, यहाँ भूत हैं। मैं कभी भूतों से डरती नहीं थी। शुरू में एक स्थान पर भूतों का वास था, मुझे कहा, वहाँ नहीं जाना। मैं डरी नहीं, वहाँ ही रही तो वहाँ से भूत भाग गया। वहाँ का वायुमण्डल पावरफुल हो गया इसलिए मैं कहती हूँ, जहाँ भी रहने जाते हो वहाँ पहले शक्तिशाली योग करो। पता नहीं वहाँ पहले कौन-कौन रहे हैं! इसलिए शक्तिशाली योग लगाओ। कई लोग योग नहीं लगाते हैं तो भूत परेशान करते हैं। ❖

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 7

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में हमने सन् 1974 तक जो विदेश सेवायें हुईं, उसके बारे में लिखा था। उसके बाद तो नये-नये देशों में सेवायें शुरू हुईं। सन् 1977 में एक राय निकली कि दादी प्रकाशमणि को विदेश यात्रा कर विदेश के वर्तमान कारोबार को देखना चाहिए तथा वहाँ की मुख्य बहनों को मार्गदर्शन भी देना चाहिए। हमने दादी जी की विदेश यात्रा का कार्यक्रम बनाया। फिर बाबा को संदेश भेजा और पूछा कि दादी के साथ कौन-कौन जाए। अव्यक्त बापदादा ने कार्यक्रम को स्वीकार किया और कहा कि दादी के साथ रमेश अकेला ही जायेगा। इस श्रीमत के कारण मैं दादी जी के साथ विदेश यात्रा पर गया।

पहले हमारा हवाई जहाज कैरो में रुका। वहाँ से आगे बढ़े तो अमेरिका की बहुत बड़ी तेल कंपनी का डायरेक्टर बाजू की सीट पर था। दादी ने कहा कि इसकी सेवा करो। हमने बाबा की कमाल देखी। वह भाई बिल्कुल नास्तिक था। जेनेवा पहुँचने के तीन घंटे तक वह भाई आस्तिक हो गया और कहा कि मैं योग सीखूँगा।

जेनेवा से हम फ्रेंकफर्ट पहुँचे। वहाँ की नगरपालिका ने दादी जी का विदेशी अतिथि के रूप में स्वागत किया और स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

वहाँ से हम लंदन गये। लंदन में तो ईश्वरीय सेवाओं की बहुत धूम मच गई थी। लंदन में सेवा कर हम लेस्टर, मेनचेस्टर आदि-आदि शहरों में भी गये। फिर हम कैनेडा गये। कैनेडा से हम ट्रिनिडाड, ग्याना, सूरीनाम आदि देशों में भी गये। जब हम ट्रिनिडाड पहुँचे तो एक अद्‌भुत घटना हुई। मुंबई से निकलने से पहले दादी प्रकाशमणि के लिए अमेरिका का वीजा प्राप्त करने के लिए हमने एप्लीकेशन दी थी परंतु वह एप्लीकेशन दो बार पुरुषार्थ करने के बाद भी कैन्सिल हो गई। तब हमने अव्यक्त बापदादा से भी पूछा कि यह कैसे हो सकता है कि दादी विदेश यात्रा पर जायें और अमेरिका न जायें। बापदादा ने जवाब दिया कि बच्चे, आगे-आगे देखते चलो, ड्रामा में क्या परिवर्तन होने वाला है।

ट्रिनिडाड में हमारी आदरणीया मोहिनी बहन ने दादी जी से अच्छे-अच्छे वी.आई.पीज की सेवायें कराईं। सभी स्थानों पर वहाँ के राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के साथ कार्यक्रम हुए। सबने दादी जी का स्वागत किया। ट्रिनिडाड में एक परिवार था। उन्होंने अमेरिका का वीजा लेने का बीड़ा उठाया। दादी जी का पासपोर्ट लेकर वे अमेरिकन दूतावास में गये। दादी जी के लिए सात दिन का वीजा मिल गया। हम दोनों तथा मोहिनी बहन न्यूयार्क जाने के लिए 707 फ्लाइट द्वारा निकले और 7 जुलाई, 1977 के दिन शाम 7 बजे न्यूयार्क पहुँचे। एयरपोर्ट पर हमारे स्वागत के लिए चंद्रू बहन, दिनेश बहन तथा अन्य बाबा के पुराने रत्न थे। उन्होंने दादी के लिए एक फ्लैट भी बुक किया था। वहाँ पर हांगकांग के श्याम भाई तथा हीरू बहन भी थे। उनकी इच्छा अनुसार हम लोग सेन एन्टोनियो गये।

वहाँ दादी जी की अध्यक्षता में मीटिंग हुई और यह राय निकली कि अमेरिका में भी संस्था को रजिस्टर्ड कराया जाये। अभी तक हमारी संस्था इंग्लैण्ड, कैनेडा, वेस्ट इंडीज, ऑस्ट्रेलिया, केन्या आदि देशों में रजिस्टर्ड हो चुकी थी। दादी जी ने कहा कि भले ही मैं हैड हूँ पर हम दादी-दीदी ने नक्की किया है कि जो आबू में होगा, वही हैड रहेगा इसलिए आपने जो यह विचार बताया है, वह आबू में भेजो। बड़ी दीदी और प्यारे बाबा इसे स्वीकार करेंगे तब हम इसे करेंगे। मैंने दादी जी को कहा कि हमारे लिए तो आप ही हैड हैं, हम आपकी स्वीकृति से आगे बढ़ सकते

हैं। तब प्यारी दादी ने माँ बनकर राय दी कि रमेश, मधुबन से पूछकर कारोबार करने में तुम्हारी भी सेफ़्टी है, नहीं तो तुम्हारे लिए कहेंगे कि रमेश ने अपना विचार बताकर दादी से जबर्दस्ती छुट्टी ली। दादी जी से यह विशेष प्रबंधन कला सीखने को मिली कि कैसे ईश्वरीय सेवायें करते भी अपनी लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन नहीं करना है।

सेन एन्टोनियो में जब मैं, श्याम भाई और चंद्रेश भाई (रोजी बहन का भाई) वकील के पास गये तो वकील ने कहा कि आप रजिस्ट्रेशन के लिए कानूनी एप्लीकेशन लिखिए। मैं तो अमेरिका का कानून जानता नहीं था परंतु प्यारे बापदादा की याद में लिखता रहा। दोनों भाई मेरे बाजू में बैठे रहे और सकाश देते रहे। बाद में उन्होंने कहा कि हमें ऐसा लग रहा था कि आप नहीं लिख रहे थे लेकिन आपके द्वारा कोई लिखवा रहा था। फिर हमने वकील को एप्लीकेशन दिखाई। उन्होंने कहा कि यह तो सौ प्रतिशत अमेरिका के कानून के मुताबिक है और वह एप्लीकेशन रजिस्ट्रेशन के लिए मंजूर कर ली गई।

अगले दिन वकील का फोन आया कि आपकी संस्था अमेरिका में रजिस्टर्ड हो गई है। यह अद्भुत चमत्कार हमने सेन एन्टोनियो में अनुभव किया।

हम सात दिन अमेरिका में रहकर हवाई जहाज द्वारा न्यूयॉर्क से लन्दन गये। लन्दन पहुँचते ही एयरपोर्ट पर हमें समाचार मिला कि उस रात अंतिम उड़ान हमारे हवाई जहाज ने भरी थी। उसके बाद न्यूयॉर्क शहर पर बिजली गिर गई थी और सारा शहर पूरी रात अंधकार में डूबा रहा था। ऊँची-ऊँची मंजिलों में रहने वाले लोग लिफ्ट न चलने के कारण रास्ते पर ही सो गये और सभी बड़े-बड़े स्टोर्स को इस घने अंधकार में लोगों ने लूट लिया। क्योंकि बिजली न होने के कारण स्टोर्स तोड़ने की सूचना पुलिस को देने वाले साधन बंद हो गये और लोगों ने बेधड़क उन्हें लूट लिया।

दूसरे दिन सुबह समाचार-पत्र द्वारा समाचार मिला कि अमेरिका के सभ्य एवं सुशिक्षित कहे जाने वाले लोगों ने मात्र एक रात में 60 लाख अमेरिकन डॉलर की सामग्री की लूटपाट की। यह बात मैं इसलिए लिख रहा हूँ कि इसी सफर में हम भारत के विभिन्न स्थानों पर भी सेवाओं के लिए गये थे। जब कानपुर गंगे दादीजी के पास पहुँचे तो वहाँ भी सारी रात पूरा शहर अंधकार में डूब गया था। दूसरे दिन समाचार-पत्र पढ़ा तो उस अंधियारी रात में किसी भी प्रकार की चोरी वा डकैती की कोई भी वारदात नहीं हुई थी। यह लेख पढ़ने वाले सभी के सामने मेरा एक प्रश्न है कि अमेरिका के नागरिक जो सभ्य, सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत कहे जाते हैं उन्होंने एक रात में मौका पाते ही 60 लाख अमेरिकन डॉलर की चोरी की और कानपुर के नागरिक अमेरिका की तुलना में अर्धशिक्षित, असभ्य कहलाये जाते हैं, उन्होंने कोई चोरी आदि नहीं की। तो आप ही निर्णय कीजिये कि सही में सुसंकृत, सुशिक्षित एवं ईमानदार कौन हैं, अमेरिका के नागरिक या भारत के?

आदरणीया प्रकाशमणि दादीजी और मैं 4-5 दिन लन्दन में रहे और वहाँ हमने अनेक प्रकार की सेवायें कीं। उसके बाद हम अफ्रीका, नैरोबी, तंजानिया, यूरेशिया आदि देशों में गये और फिर वहाँ से मॉरीशियस गये और फिर मॉरीशियस से अमेरिका के पर्थ, मेलबर्न, सिडनी एवं न्यूजीलैण्ड में भी गये। वहाँ से हांगकांग गये और हांगकांग से फिर सीधे भारत आये। इन स्थानों पर आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी के चुम्बकीय व्यक्तित्व के कारण अनेक प्रकार की ईश्वरीय सेवायें हुईं। उनका समाचार अगले लेख में लिखेंगे।

मुझे गर्व है कि मुझे ऐसी आदरणीया दादीजी के साथ साढ़े चार मास विदेश में और फिर दो मास भारत में परिभ्रमण कर ईश्वरीय सेवा करने का मौका मिला। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका मन को छू लेती है। इसे पढ़कर ऐसा लगता है कि हम बाबा के साथ स्वर्ग में बातें कर रहे हैं। फरवरी अंक में 'विशेषता शिवरात्रि की' पढ़कर मन मुग्ध हो गया। इसमें हमें सच्ची शिवरात्रि के बारे में जानने का मौका मिला। अत: इसे पढ़कर आत्मा खुशी से झूम उठी। आशा है यह पत्रिका पूरे विश्व में सदा ही इसी तरह प्रकाशित होती रहेगी।

– ब्र.कु.मुन्नी देवी, मथुरा

ज्ञानामृत के मार्च, 2013 अंक का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक लगा। संजय की कलम से 'होली का आध्यात्मिक रहस्य' तथा सम्पादकीय 'परिस्थितियों में अचल-अडोल' पढ़कर बहुत ही आत्मिक शान्ति मिली। 'व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति', 'नारी तू नारायणी' तथा 'देना ही लेना है' आलेख बहुत बढ़िया लगे। लेखकों को साधुवाद। पत्रिका भले ही कम पृष्ठों की है किन्तु गागर में सागर है। सम्पादन कार्य बधाई के काबिल है।

– राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'
संपादक 'आकांक्षा' पत्रिका
टीकमगढ़

फरवरी, 2013 अंक में 'काम के गटर में तड़पता समाज' आलेख वर्तमान समय में मानवीय जीवन के अवमूल्यन का स्पष्ट उल्लेख करता है। विलासिता की वस्तुओं की ओर आकर्षण इसका मुख्य कारण है जिससे मनुष्य का ध्यान नैतिकता, राष्ट्रीयता, समाज, परिवार और यहाँ तक कि अपने बच्चों से भी हट रहा है। यदि आप गैर ज़रूरी चीज़ें लगातार खरीदते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब ज़रूरी वस्तुओं को भी बेचना पड़ सकता है।

– कृष्णपाल सिंह केलवा,
महूगाँव (म.प्र.)

मार्च, 2013 का संपादकीय दिल को छूने वाला था। इसमें बताया गया कि विपरीत परिस्थितियों में क्या करें, कैसे अपने को सम्भालें और विचलित न होकर अचल-अडोल रहें। दादी जानकी के उत्तर पढ़कर हर समस्या का समाधान मिल जाता है। विदेशों में ईश्वरीय सेवा के बारे में पढ़कर मन खुशी से भर उठता है। 'ज्वालारूप योग से करो चमत्कार', 'व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति', 'सकारात्मक सोच' लेख पढ़कर बहुत बातों का पता चला। पृष्ठों के नीचे लिखे स्लोगन बहुत नैतिक बल देते हैं।

फरवरी, 2013 अंक में ब्रह्माकुमार सूर्य का 'श्रेष्ठ संकल्पों की कमाल' लेख मन को छूने वाला तथा जीवन परिवर्तन करने वाली बातों से भरपूर है। मन को शांत तथा नियंत्रित कैसे करें, व्यर्थ संकल्प तथा भय कैसे समाप्त करें, अच्छे वायब्रेशन्स से बच्चों में कैसे परिवर्तन लाएँ, ये सभी बातें उत्साहवर्धक हैं।

– एम.एल.अरोड़ा, करनाल

ज्ञानामृत पत्रिका का उद्देश्य बुरी वृत्तियों का त्याग कर संस्कारवान मूल्यों को धारण करना है। इसी में जीवन की सच्ची प्रगति है। 'अंतर्मन की ओर निवेश' आज की महिलाओं के लिए टॉनिक जैसा है। व्यक्तिगत अनुभव के लेख दुखी व तनावपूर्ण वातावरण में नया जीवन जीने का संदेश देते हैं। पत्रिका के स्लोगन बहुत श्रेष्ठ व प्रेरणादायी हैं।

– लक्ष्मीकांत महादुले, नागपुर

अप्रैल, 2013 अंक के लेख 'ज्ञान चंद्रमा की उज्ज्वल किरण - दादी निर्मलशांता जी ' में लेखिका ने जिस प्रज्ञा से दादी निर्मलशांता के संदर्भ में लिखा है, मैं हतप्रभ हो गांभीर्य की त्रिमूर्ति को कृतज्ञता भरी ओजपूर्ण दृष्टि से निहारता ही नहीं रहा अपितु नयनों ने भर-भर नीर खूब छलकाया। मैं जितनी भी बार पढ़ता, एक ऐसा कृतज्ञतापूर्ण हास्य मेरे भीतर से उभरकर, वाणी को शब्द देकर अनन्त आकाश में विलीन हो जाता, वह शब्द था 'वाह'! ज्ञान चंद्रमा की उज्ज्वल किरण ने जिसे इतनी महानता प्रदान की, वे कितनी महान हैं और सतयुग में होंगी।

– ब्र.कु. शम्भू प्रसाद, जयपुर

मम्मा ने ही मुझे योग सिखाया और योग्य बनाया

● ब्रह्माकुमारी दादी धैर्यमणि, संगम भवन (आबू रोड)

सन् 1937 में मैं पहली बार अपनी बहन भगवती के साथ बाबा-मम्मा के सत्संग में गयी। जाते ही मुझे मम्मा ने देख लिया, गले लगाया, टोली खिलायी एवं मुसकरायी। मैं भी मुसकरायी तो मम्मा ने कहा, कल भी आना। मैं उस दिन से रोज़ जाती रही और ज्ञान सुनकर बहुत अच्छा लगा। मम्मा ही मुझे ज्ञान प्राप्त करने तथा यज्ञ में लाने के लिए निमित्त बनीं। मैं बहुत छोटी थी इसलिए मम्मा ने कहा, तुम ओम निवास में रहकर ज्ञान-योग की पढ़ाई करो। माता-पिता तो छुट्टी नहीं दे रहे थे। मम्मा ने मुझे युक्ति बतायी कि जब माँ-बाप बहुत खुशी में हों तब जाकर तुम उनकी गोद में बैठो और प्यार से छुट्टी माँगो, अवश्य दे देंगे। ऐसे ही हुआ। एक दिन जब मेरे माँ-बाप बहुत खुश मूड में थे तो मैंने उनसे छुट्टी माँगी और पिता जी ने पत्र लिखकर दे दिया, साथ में माता जी के भी हस्ताक्षर करवाये। इस प्रकार, लौकिक बन्धन से मुक्त कराने में मम्मा ने बहुत मदद की।

कर्मेन्द्रियजीत महाकाली

अपने साथ संदली पर बिठाकर मम्मा हमें योग सिखाती थी, हमारी अवस्था को चेक करती थी। कर्मणा सेवा करते समय भी मम्मा आत्मिक स्थिति में रहती थी। एक बार मैंने पूछा, 'मम्मा, आप गेहूँ साफ कर रही हैं, अभी आपका क्या संकल्प चल रहा है?' मम्मा ने कहा, 'हम गेहूँ साफ नहीं कर रहे हैं, हम साक्षीद्रष्टा होकर कर्मेन्द्रियों से साफ़ करा रहे हैं। मैं नहीं कर रही हूँ, करा रही हूँ।' उस समय ज्ञान का विस्तार इतना नहीं था लेकिन मम्मा-बाबा को देख-देखकर हमने गुणों को अपनाया, जीना सीखा और जीवन बनाया। **मम्मा का जीवन नेचुरल था। उनका स्वभाव बहुत सरल था। मिठास थी उनके व्यवहार में। उनमें सदा यह भाव रहता था कि सबको आगे बढ़ायें। मम्मा हरेक की योग्यता और विशेषता अनुसार वही कार्य दिया करती थी जो वह सहजता से कर सके।**

मम्मा कैसे बनीं मम्मा?

मम्मा सबकी पालना कर मम्मा बनी, सबको माँ की ममता देकर मम्मा बनी। सबको अपना बनाकर मम्मा बनी। पवित्रता और नि:स्वार्थ प्यार की शक्ति से सबको आकर्षित कर मम्मा बनी। मम्मा से मुझे श्री लक्ष्मी और जगदम्बा की भासना आती थी। मम्मा ने हमें सिखाया कि किसी से भी वैरभाव नहीं रखना है, किसी का अवगुण नहीं देखना और न ही अपनाना है।

चन्द्रकान्ति में योग कराने वाली सजग साधिका

हफ्ते में एक बार हम सुप्रीम पार्टी वाले मम्मा के साथ बैठकर अमृतवेले योग करते थे। जब मम्मा चाँदनी में बैठ योग कराती थी तो हम भी अलग-अलग कोनों में बैठ योग करते थे। कभी-कभी मम्मा को ही अपने ग्रुप में बुलाते थे और मम्मा 3.30 से 4.00 बजे तक हमको योग कराती थी। हमें उस समय ज्ञान-चन्द्र माँ के शीतल प्रकम्पनों से शान्तिधाम का अनुभव होता था। इस प्रकार मम्मा ने हमें योगी के साथ-साथ योग्य बनाया।

मम्मा अमृतवेले दो बजे उठकर अकेले में योग करती थी। फिर साढ़े तीन बजे तैयार होकर बाहर आती थी। चार बजे से पाँच बजे तक सामूहिक योग होता था, उसमें मम्मा अवश्य आती थी। उसके बाद नित्यकर्म पूरा करती थी। फिर एक-एक दिन, एक-एक बहन को संदली पर बिठाकर ज्ञान की कोई-न-कोई प्वाइंट पर समझाने के लिए कहती थी। इस प्रकार मम्मा सबको भाषण करना, क्लास कराना सिखाती थी। बाद में सेवा करते थे। दोपहर के

भोजन के बाद विश्राम होता था। शाम को 5 बजे मम्मा ऑफिस में बैठती थीं और यज्ञवत्सों को टोली खिलाती थी। फिर ऑफिस का कामकाज देखती थी। उस समय मैं यज्ञ में मुरली लिखने की सेवा करती थी। शाम को हम यज्ञसेवा जैसे अनाज साफ़ करना, सब्जी काटना आदि करते थे। रात्रि भोजन के बाद मम्मा कचहरी कराती थी।

मीठी माँ की सुनायी हुई अनमोल शिक्षायें

1.इस ज्ञान से सिर्फ अपना पेट नहीं भरना है लेकिन दु:खियों को भी शान्ति देने का उपाय करना है। यही सर्वोत्तम सेवा है।

2.परमपिता परमात्मा विश्व का रचयिता है। वो तो नयी दुनिया रचने का काम कर ही लेगा लेकिन तुम बच्चे स्वयं अपने विकारों का विनाश और दैवी गुणों की रचना करो। जैसे किसी के शरीर पर कोई बोझ रखा हो तो वह जल्दी-जल्दी चल नहीं सकता, धीरे-धीरे चलेगा, इसी तरह, तुम बच्चों के सिर पर भी पापों के बोझ की बहुत भारी गठरी है। अगर तुम भी जल्दी-जल्दी उन्नति को पाना चाहते हो तो पहले पापों की गठरी उतारो अर्थात् आत्मा के पिछले पापों को दग्ध करो। इसकी युक्ति यही है कि श्वासों-श्वास अपने परमपिता परमात्मा शिव को याद करो, उनके साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ पूरा हक़ जमाओ कि 21 जन्मों तक दैवी स्वराज्य प्राप्त कर के ही रहेंगे, ऐसा संकल्प अन्दर में पक्का हो।

3. कोई-कोई आत्मा को घड़ी-घड़ी पास्ट जीवन की याद आती है जिस कारण वह ख़ुश नहीं रहती। अन्दर देखना है कि मुझे अब पुराने चौपड़े को ख़त्म कर नया चौपड़ा (कर्मों का खाता) बनाना है। अगर नये में पुराना संकल्प-विकल्प मिक्स करते रहेंगे तो तुम आत्माओं का न पुराना साफ़ होगा और न नया चौपड़ा बन सकेगा। इसलिए पुराने मायावी संकल्प-विकल्प को भुला दो। पास्ट इज पास्ट (बीती सो बीती), तुम आत्माओं का नया ईश्वरीय जन्म हो गया तो सदा ख़ुशी में रहो।

4. सर्विस करने का मतलब अपनी जीवन को आदर्शमय जीवन बनाना है जिससे अन्य आत्माओं के ऊपर प्रभाव पड़ सके।

5. अब तुम सच्चे राम की सच्ची सीतायें बनी हो तो रावण की कोई भी निशानी अपने पास न रखो। ❖

सरस्वती जगदम्बा माँ

ब्र.कु. सत्यनारायण, ज्ञान सरोवर

मुरलीधर की दीवानी और मस्तानी थीं आप
विद्या की देवी होते भी, विद्यार्थिनी थीं आप
ज्ञान बूंद की अनुरागी, चातक समान थीं आप
सरस्वती जगदम्बा माँ, सच्ची गोपी थीं आप

आपकी नजरों में समाया रहता था शिव बाप
हुकमी हुक्म चला रहा है, ये कहती थीं आप
ज्ञान, योग और धारणा की साक्षात् मूर्त थीं आप
सरस्वती जगदम्बा माँ, सच्ची गोपी थीं आप

संसार से उपराम थीं, दिव्य परी थीं आप
गुण रत्नों से सजी हुई, शक्ति रत्न थीं आप
करुणा स्वरूप और क्षमापूर्ण थीं, प्रेममई थीं आप
सरस्वती जगदम्बा माँ, सच्ची गोपी थीं आप

पवित्रता की जननी थीं, साक्षात् सरस्वती आप
बाप समान निरहंकारी थीं, विश्व वन्दनीय आप
ब्रह्मा बाप के पदचिन्हों पर, चलने वाली आप
सरस्वती जगदम्बा माँ, सच्ची गोपी थीं आप

अंगूरों की बेल दिलाती, याद आपकी आज
24 जून, 1965 अव्यक्त हो गईं आप
सम्पूर्णता को धारण कर, यादगार बन गईं आप
सरस्वती जगदम्बा माँ, सच्ची गोपी थीं आप

अतीत के झरोखे से

● ब्रह्माकुमारी गीता, नवसारी

करीब 55 वर्ष पूर्व लौकिक पिताजी (जिन्हें ईश्वरीय विश्व विद्यालय में त्यागीजी के नाम से पहचानते हैं) कानपुर में सरकारी अधिकारी तथा देवी के अनन्य भक्त थे। मन में बस यह आश थी कि मुझे एक बार देवी के दर्शन हो जायें। एक दिन उन्हें आध्यात्मिक कार्यक्रम के निमंत्रण का पर्चा किसी के द्वारा प्राप्त हुआ, पढ़ते ही उत्सुकता हुई इसमें भाग लेने की। जब वे कार्यक्रम-स्थल पर पहुँचे तो एक बड़े पण्डाल में मम्मा का प्रवचन चल रहा था। उन्हें देखते ही त्यागी जी को देवी का साक्षात्कार हुआ। उसी क्षण उन्हें निश्चय हो गया कि ये वो ही देवी हैं जिन्हें मैं ढूँढ रहा था। इस प्रकार मम्मा द्वारा उन्हें नया अलौकिक जन्म मिल गया।

कविता सुनाने का सुअवसर

कुछ समय पश्चात् त्यागी जी का तबादला मेरठ में हो गया। कैन्ट क्षेत्र में घर में ही उन्होंने ब्रह्माकुमारी पाठशाला आरंभ कर दी। धीरे-धीरे क्लास में आने वाले भाई-बहनों की संख्या बढ़ने लगी इसलिए पाठशाला के लिए नज़दीक का एक मकान किराये पर लिया गया। कुछ समय पश्चात मीठी मम्मा का मेरठ आगमन हुआ। उनके आगमन पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मम्मा हमारे लौकिक घर तथा पाठशाला में भी पधारी। मेरी आयु करीब 4 वर्ष थी। कार्यक्रम में मुझ आत्मा को भी कविता सुनाने की सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। मम्मा सामने बैठी थी और मैंने मम्मा की तरफ हाव-भाव प्रदर्शन द्वारा तोतली भाषा में कविता सुनाना प्रारंभ किया जिसकी दो पंक्तियाँ मुझे आज भी अक्षरश: याद हैं –

‘काम-क्रोध की चटनी बनाओ,
लोभ-मोह की थाली।
सामने बैठी काली,
देखो सामने बैठी काली।।’

शीतल गोद और असीमित रूहानी प्यार की अमिट छाप

जैसे ही मम्मा की तरफ इशारा करके सुनाया, मम्मा ने सभी के बीच में मुझे अपनी गोद में ले लिया और बहुत ही दुलार किया। इससे माँ की शीतल गोद और असीमित रूहानी प्यार की अमिट छाप जीवन भर के लिए मुझ पर लग गई। माँ ने दुनिया की सारी आँधियों और तूफानों से सदा-सदा के लिए अपनी गोद में सुरक्षित कर लिया। उस दिव्य विभूति के रूहानी स्पर्श की अलौकिक स्मृति आज भी अंतर्मन को झंकृत करती रहती है और चित्त को डुबो देती है उन अनुभवों के सागर में जहाँ गहरी शांति और संतोष है, आत्मा की तृप्ति है।

मम्मा का तप तथा बाबा के प्रति अटूट प्यार ऐसा था जैसे चकोर का चांद से। सारी रात मम्मा छत पर बैठकर तपस्या करती, अमृतवेले छत से उतरते समय फरिश्ते रूप में, बच्चों को दृष्टि के द्वारा चंद्रमा-सी शीतलता प्रदान करती। माँ की वह अलौकिक रूहानी दृष्टि कैसे भी व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर शुद्ध पवित्र बनाने में समर्थ थी। सचमुच उनका सानिध्य स्वर्गिक सुखों से भी बढ़कर था। मम्मा का शांत, दिव्य, अलौकिक व्यक्तित्व ऐसा था कि उन्हें देखते ही 80 वर्ष के बुजुर्ग भी बोल उठते थे ‘माँ’। मुझे याद है, हमारे लौकिक घर के नजदीक ही एक बुजुर्ग थे जिनका नाम शादीराम जी था। जब उन्होंने मम्मा को पहली बार देखा तो अनायास ही उनके हृदय के उद्गार निकले ‘माँ’। इसलिये कहते हैं,

मम्मा तेरी वाणी,
है कितनी कल्याणी।
है गोद तेरी जो पाता,
अनाथ से वो सनाथ बन जाता।
पालना वो तेरी रूहानी,

बना देती थी देह से न्यारी।
मम्मा तेरी वाणी, है कितनी कल्याणी।।

माँ एकाक्षरी शब्द है परंतु मम्मा का जीवन हम प्रत्येक ब्रह्मावत्स के जीवन की पुस्तक को महान ग्रंथ बनाने वाला है। वे स्नेह की सागर और वात्सल्य की महासागर थीं जिसमें डुबकी लगाने का सुख मुझ आत्मा को बाल्यकाल में प्राप्त हुआ। ऐसी प्राणों से प्यारी माँ, शक्ति स्वरूपा, करुणामूर्ति, त्यागमूर्ति, प्रेममूर्ति, समर्पिता, सहनशील, संवेदना मूर्ति, पालनहारी माँ! आपको शत शत श्रद्धा सुमन अर्पित करते हृदय गद्‌गद् हो उठा है। वाह मेरा भाग्य, जो संगमयुग में जगत माँ का प्यार और पालना पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मम्मा के सानिध्य में बीते संगमयुग के सुनहरे पल, सुहावनी घड़ियाँ कल्प-कल्प के लिए ड्रामा की रील में लिपट गईं।

वात्सल्य के झरने में तर-बतर होकर हृदय भावविभोर हो उठा है। भावों को जितना मुनासिब हो सका, शब्दस्थ करने का प्रयास किया है। अंत में मीठी मम्मा के लिए यही कहूँगी –

‘लगती सामान्य पर खास है मम्मा,
जीता-जागता उल्लास है मम्मा।
कोई अंधेरा रोक न सके जिसे,
वह सनातन सूर्य का प्रकाश है मम्मा।।’

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी
नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है। सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें: डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू
मोबाइल: 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49
वेबसाइट: www.ghrc-abu.com
ई-मेल:drmurlidharsharma@gmail.com

वही शिव भगवान चाहिए

ब्र.कु.हवासिंह, नजफगढ़, नई दिल्ली

हर प्राणी हो जिसको प्यारा, वो ही शिव भगवान चाहिए।
जो उसका अनुशासन माने, वह सच्चा इंसान चाहिए।।

पर पीड़ा हरता रहता और पतन को मार भगाये।
सृजनशील आदर्शों पर जो, अंगद-सा दृढ़ पाँव जमाये।।
भेदभाव की छाती पर चढ़, जो समता का शंख बजाये।
ऐसी बहे प्यार की गंगा, जिसको कोई रोक न पाये।।
मानव को जो देव बना दे, वह पवित्र ज्ञान चाहिये।
हर प्राणी हो जिसको प्यारा......................

जीवन के सब क्लेश मिटा दे, हर मन में प्रसन्नता लाए।
अधिकारों की होड़ मिटाकर, कर्त्तव्यों से प्रीत कराये।।
भेदभाव को दूर भगा दे, भाईचारे का पाठ पढ़ाये।
जिसके होने से मानव की, मानव से दूरी घट जाए।।
धरती को जो स्वर्ग बना दे, ऐसा ज्ञान-विज्ञान चाहिए।
हर प्राणी हो जिसको प्यारा......................

दुष्प्रवृत्तियों की जड़ काटे, सत्प्रवृत्तियों को अपनाये।
दुर्विचार-दुर्भाव हटा कर, सद्‌विचार की बेल बढ़ाये।।
मानव को जो मानवता की गरिमा तक फिर से पहुँचाये।
मानव के उज्ज्वल भविष्य का सपना जो साकार बनाये।।
बन ब्रह्मास्त्र लक्ष्य तक पहुँचे, तेजस्वी अभियान चाहिये।
हर प्राणी हो जिसको प्यारा......................

आबू रोड तलहटी में शिव भगवान को है बोलते देखा।
हर ब्रह्माकुमार-कुमारी के दिल में सच्चा ज्ञान उफनते देखा।।
धर्म, नीति, ज्ञान-विज्ञान को कदम से कदम मिलाते देखा।
ओमशांति की गंगोत्री से सद्ज्ञान-धार निकलते देखा।।
मोहताज को सिरताज बना दे, ऐसा ऊँचा स्वमान चाहिए।
हर प्राणी हो जिसको प्यारा......................

ज्ञान की देवी माँ की सम्पूर्ण अमर कथा

● **ब्रह्माकुमारी प्रतिमा**

मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (प्यारी-मीठी मम्मा) को तो हम बाबा के छोटे और देर से आने वाले बच्चों ने साकार में नहीं देखा किन्तु न देखते हुए भी उनके जीवन-चरित्र की जो महिमा हमने जानी है उसे शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं है। उनका जीवन-चरित्र अद्वितीय है, आदर्श है और करोड़ों मनुष्यात्माओं के लिए प्रेरणादायक है

मम्मा ने स्वयं को सदा गुप्त रखा

जिस सहजता और सरलता से उन्होंने सर्वशक्तिवान, निराकार, ज्योतिर्बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव के ज्ञान को सभी मनुष्यात्माओं को समझाया उसका कोई सानी नहीं है। उन्होंने अपनी बुद्धि से परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस कदर पूरी तरह तल्लीन होकर बीसों नाखूनों के ज़ोर से प्यारे पिता परमात्मा के गूढ़ ज्ञान को मातृवत् समझाया कि सभी मनुष्यात्माओं ने उनको माँ की पदवी दी। प्यारे पिता परमात्मा शिव ने भी उनको छोटी उम्र में ही जगदम्बा सरस्वती का अमर वरदान और टाइटल देकर जगत माता, जगत जननी बना दिया। प्यारे पिता परमात्मा शिव को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने हेतु मम्मा ने स्वयं को सदा गुप्त ही रखा। शायद इसीलिए विश्व में भी सरस्वती की महिमा होती तो है किन्तु वे गुप्त हैं, यही उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है। बाज़ार में भी ढेरों शास्त्र और साहित्य सभी देवी-देवताओं के मिलते हैं किन्तु सरस्वती के ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलते। इसी प्रकार अन्य देवी-देवताओं के भजन, संगीत, कैसेट्स इत्यादि मिलते हैं किन्तु माता सरस्वती के गीत उपलब्ध भी हैं तो उंगलियों पर गिनने लायक। प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर गंगा और यमुना नदी तो दिखाई देती हैं किन्तु सरस्वती (तीसरी नदी) को गुप्त बताया है।

चूंकि मम्मा ने विश्व के आगे पिता को प्रत्यक्ष करने हेतु स्वयं के अस्तित्व को भी मिटा दिया इसलिए नारी शक्ति विश्व में अमर हो गई। पूरे विश्व में माताएं अपने बच्चों की श्रेष्ठ परवरिश कर, तालीम दे पिता का नाम रोशन करवाती हैं। जब भी कोई व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है, कोई महान कार्य करता है या समाज को रोशनी देता है तो उसके पिता का ही नाम रोशन होता है जबकि उसकी सफलता के पीछे पूरा हाथ माँ का होता है।

ब्रह्माकुमारी बहनों के लिए आदर्श नींव का स्तंभ

मम्मा ने भी जगत जननी की पदवी प्राप्त कर अनेक मनुष्यात्माओं को ईश्वरीय जन्म, मरजीवा जन्म देकर श्रेष्ठ ईश्वरीय रूहानी प्यार भरी पालना दी। उनकी ज्ञानवीणा में इतना माधुर्य था कि ईश्वरीय प्यार में तल्लीन मनुष्यात्माओं के तन-मन के तार झंकृत हो जाते थे और वे एक अजब रूहानी मस्ती में खो जाते थे। इतनी प्यार भरी कशिश मनुष्यात्माओं को होती थी कि वे सहज ही पुरानी दुनिया को भूल, अव्यक्त आकर्षण से आकर्षित हो ईश्वरीय ज्ञान एवं योग से

जीवन पवित्र बनाने के लिए खींचे चले आते थे। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नवागत ब्रह्माकुमारी बहनों के लिए, यही एक प्रेरणा छोड़ वे एक आदर्श नींव का स्तंभ बन गईं।

ज्ञान-धन की देवी

जहाँ पिताश्री ब्रह्मा बाबा पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वालों एवं वानप्रस्थियों के लिए एक आदर्श उदाहरण हैं वहीं मम्मा, कुमार और कुमारी जीवन जीने वालों के लिए एक अद्वितीय उदाहरण हैं। इस प्रकार नींव के इन दोनों स्तंभों को सामने रखते हुए विश्व की कोई भी आत्मा चाहे छोटे हों या बड़े, स्त्री हों या पुरुष, यह नहीं कह सकते कि पवित्र योगी जीवन जीना असम्भव है। पिताश्री ब्रह्मा बाबा अपनी सारी सम्पत्ति ईश्वरीय विश्व विद्यालय की माताओं, बहनों को समर्पित कर नम्बरवन में गए पर मम्मा बगैर धन के ही नम्बरवन में गई। इसलिए वे उन लोगों के प्रश्नों का एक अच्छा उदाहरण हैं जो यह कहते हैं कि यहाँ तो पैसे वालों को ही पूछा जाता है। हम सभी ब्रह्मावत्स जानते हैं कि मम्मा एक साधारण परिवार से आई थी। स्थूल धन न होते हुए भी ज्ञान-धन की बदौलत वे शिखर पर जा पहुँचीं। ज्ञान-धन का अखुट भण्डार उनके पास था इसीलिए वे ज्ञान की देवी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध एवं अमर हो गईं।

यादगार की आराधना से बना मूर्ख भी कवि

भक्ति मार्ग में कहा जाता है कि माता सरस्वती की आराधना से एक निपट मूर्ख भी बुद्धिमान बन जाता है। इसके प्रमाण में महाकवि कालिदास की कथा आती है कि किस प्रकार उनकी पत्नी राजकुमारी विद्योत्मा द्वारा उन्हें घर से बाहर निकाल दिए जाने पर उन्होंने विद्या प्राप्ति के लिए भगवती सरस्वती की आराधना की, जिसके फलस्वरूप कुछ समय में ही वे परम विद्वान तथा महाकवि बन कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह तो हुई सरस्वती की यादगार रूप की महिमा। जब यादगार रूप की आराधना करने पर एक मूर्ख, कवि बन सकता है तो फिर हम तो चैतन्य में उस ज्ञान की देवी सरस्वती (मम्मा) की साकार एवं अव्यक्त पालना का अनुभव कर रहे हैं। तो कितना न हमें खुश एवं गद्‌गद् होना चाहिए कि इस विश्व की आदि माता की पालना लेने का भाग्य नसीब हुआ है।

मम्मा की बुद्धि का कोई सानी नहीं था, साथ ही साथ निडरता भी उनके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसलिए विरोधियों द्वारा कोर्ट केस कर देने पर बाबा ने उनको ही न्यायालय में पेशी के लिए भेजा और हम सब जानते हैं कि किस तरह उनके अकाट्य तर्कों के आगे न्यायाधीश महोदय को नतमस्तक हो उन्हें बाइज्जत बरी करना पड़ा।

उनकी आशाओं को पूरा करना ही सच्चे श्रद्धा सुमन

मम्मा जहाँ भी प्रवचन इत्यादि के लिए जाती थी तो जनता का समूह उन्हें सुनने के लिए दौड़ पड़ता था। ऐसी कशिश, ऐसा आकर्षण आपकी वाणी में था। आप सच्चे अर्थों में ज्ञान की गुप्त देवी हैं। आपको प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम अध्यक्षा अथवा प्रथम प्रधान बनने का श्रेय प्राप्त है। इसी पद का निर्वहन करते आपने 24 जून, 1965 को पुराना शरीर छोड़ सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त किया। अब 24 जून को यदि हमें सच्चे अर्थों में श्रद्धा सुमन अर्पित करने हैं तो हम उनकी आशाओं को पूरा करें। उनकी यही आशा है कि हम सब जल्दी-से-जल्दी इस धरा पर शिव बाबा को प्रत्यक्ष करें। इसके लिए हमें, जैसा कि बाबा ने कहा है, कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाकर स्वराज्य अधिकारी बनना है। नष्टोमोहा बन विदेही स्थिति के अनुभव को बढ़ाना है। हुक्मी हुक्म चला रहा... यह मम्मा का प्यारा स्लोगन था। वे इसी स्लोगन के साथ सदा हाँ जी का पार्ट बजाया करती थीं। तो आइये, हम भी इसी प्रकार हाँ जी का पार्ट बजाते फालो-फादर, फालो मदर करते हुए सच्चे सपूत बनने का सबूत दें। ❖

चक्रव्यूह से सावधान

● ब्रह्माकुमार विनायक, पांडव भवन, आबू पर्वत

महाभारत की कहानी में पांडवों और कौरवों का वर्णन आता है। पांडव अर्थात् भगवान से प्रीत बुद्धि, सदा उन की श्रीमत पर चलने वाले, सुकर्म करने वाले। कौरव माना विपरीत बुद्धि और पापकर्मी, सदा औरों को दु:ख देने वाले। इन दोनों का युद्ध चला। जब पांडवों की विजय निश्चित होती जा रही थी तो कौरवों ने चक्रव्यूह की रचना की जिसमें तीन कौरव महारथी अर्थात् दुर्योधन, द्रोण और कर्ण उपस्थित थे जिन्होंने पांडवों का सर्वनाश करने की प्रतिज्ञा की थी। आखिर इस चक्रव्यूह में एक पांडव महावीर की वीभत्स मृत्यु हो ही गई जिसको चक्रव्यूह से बाहर निकलने की युक्ति पता नहीं थी।

संगमयुग में पिता परमात्मा और आत्माओं के मंगल मिलन तथा मानव से देवमानव बनने के पुरुषार्थ में पांडवों की हार व जीत की यादगार रूप ही महाभारत की कहानी है। चक्रव्यूह की रचना और उसमें अभिमन्यु की मृत्यु होना यह भी एक यादगार ही है। विचार कीजिए, आज कौरवों ने अर्थात् मायावी दुनिया ने ऐसे कौन-से चक्रव्यूह की रचना की है जिसमें पुरुषार्थी बच्चे धीरे-धीरे फंसकर, बाहर आने का रास्ता भूल रहे हैं और संगमयुग के अति अमूल्य समय को नष्ट कर रहे हैं?

चक्रव्यूह का नाम है छोटा परदा और उसमें हैं तीन कौरव महारथी – टी.वी., इंटरनेट और मोबाइल।

टी.वी.

चक्रव्यूह का रहस्य था, अंदर जाने के बाद बाहर आने का रास्ता दिखाई न देना। यहाँ भी ऐसे ही है। टी.वी. के सामने आप बैठते हैं सिर्फ समाचार देखने लेकिन होता क्या है? माया चुपके से आप के हाथ से रिमोट को छीन लेती है और दुनिया के रंग-बिरंगे आकर्षणों के चक्रव्यूह में फंसा देती है। वह मायाजाल इतना शक्तिशाली रहता है कि मन और बुद्धि दोनों माया के कैदी होकर परखने की या निर्णय करने की शक्ति को संपूर्ण खो देते हैं। भगवान की श्रीमत का उल्लंघन हो रहा है, स्वयं का आध्यात्मिक अध:पतन हो रहा है यह जानते हुए, मानते हुए, इसके भयंकर परिणाम को जानते हुए भी विकर्म हो जाता है। विकर्म करना अर्थात् सारे कल्प की अपनी पात्रता को लकीर लगा देना। इसी को यादगार में मौत के रूप में दिखाया है।

कई बहन-भाई कहते हैं, बाबा, हम तो सिर्फ क्रिकेट आदि खेल देखते हैं या समाचार देखते हैं इसमें क्या खराबी है? लेकिन यही है ज्ञान की धारणा की कमी। समान बनने के लिए या स्वर्णयुग में ऊंच पद पाने के लिए चार विषय हैं – ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा। **विचार कीजिए, क्रिकेट या समाचार देखना, इन चारों में से कौन-से विषय में आते हैं?**

तन्दुरुस्ती के लिए खेलना अलग बात है लेकिन समय बिताने के लिए या मनोरंजन अर्थात् मन की गुप्त इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए टी.वी का सहारा लेना, यह अपने आप को, बाप को और दैवी परिवार को ठगना है। **जबकि इस बात को हम जानते हैं कि दुनिया की सर्व आत्माएँ शिवबाबा के बच्चे हैं, आपस में भाई-भाई हैं तो फलाना हारे और फलाना जीते इस मनोभाव से खेल देखना, किसी की हार और किसी की जीत की चाहना रखना, क्या यह विश्व भ्रातृत्व के पवित्र बंधन को तोड़ना नहीं है?**

समाचार में भी लड़ाई-झगड़ा, लूट-मार, अत्याचार-अनाचार यही तो है। इन चीजों को देखना क्या आप पवित्र हंसों को शोभता है? **क्या यह श्रीमत का पालन है**?

इन्टरनेट

हम इंटरनेट में जाते तो सेवा के लिए हैं या आवश्यक जानकारी लेने के लिए लेकिन, अंदर जाने के बाद

माया के विभिन्न प्रलोभन भरे रूपों के पीछे जाकर सुरक्षित बाहर आने का रास्ता ही भूल जाते हैं और व्यक्ति-वस्तु-वैभव या दुनियावी मनोरंजन के जाल में फंस पड़ते हैं। **जब वहाँ से बाहर निकलते हैं तो जरूर घायल हो के ही निकलते हैं जिस घाव को ठीक करना बहुत ही कठिन है।** इसके भयानक परिणाम भुगतने पड़ते हैं। जैसे कोई कारागृह की सज़ा खाकर लौटते हैं तो समाज में उनका क्या मूल्य रह जाता है? सभी की नज़र में वे गिर जाते हैं। स्नेह, प्यार, गौरव, अपनेपन से वंचित रह जाते हैं। हमेशा दूसरों से नफरत, वैर-विरोध, अपमान का सामना करना पड़ता है। यहाँ भी ऐसे हैं, जो माया की कैद में रहकर विकर्म करते रहते हैं वे आशीर्वाद के पात्र बनने की बजाय बद्दुआओं के शिकार बन पड़ते हैं।

आश्चर्य तो इस बात का है कि कई बहन-भाई योग करने के लिए समय न मिलने की फरियाद करते रहते हैं लेकिन कम्प्यूटर के सामने घंटों बैठकर फेसबुक आदि में देहधारियों के नए-नए चेहरे ढूँढ़ने का समय उन्हें पता नहीं कहाँ से मिल जाता है? मैसेज भेजना, चैटिंग करना, गेम्स खेलना आदि व्यर्थ बातों में ढेर समय बिताने वाले बच्चे ही अक्सर राजयोग के अभ्यास के लिए समय की कमी का बहाना देते हैं।

मोबाइल

भले सेवा को आगे बढ़ाने में मोबाइल से मदद मिल रही है लेकिन मन और बुद्धि को मनमनाभव अवस्था से दूर ले जा कर देहधारियों की याद और संबंध-संपर्क के जाल में फंसाना, माया के विभिन्न रूपों के अर्थात् विडियो, दुनियावी गीत-संगीत, गेम्स आदि के आकर्षण में लाना, व्यर्थ बातों को, समाचारों को जहाँ-तहाँ फैलाकर सब के संकल्पों को कमज़ोर बनाना, यह सब मोबाइल रूपी कौरव का ही षड्यंत्र है।

एक यादगार परीक्षित राजा की भी है। उसे श्राप था कि साँप से मृत्यु को पाए। उसने ऐसी जगह पर अपना महल बनाया जहाँ कोई भी जीव-जंतु प्रवेश ही न कर सके। लेकिन, एक बार राजा को फल खाने की इच्छा हुई। उस फल में एक कीड़ा था। राजा कीड़े के गुप्त और भयानक रूप को पहचान नहीं सका। उसी कीडे ने सांप बनकर राजा की जान ले ली। मोबाइल भी गुप्त और साधारण रूप में आया हुआ एक भयानक कीड़ा है। **इसका मतलब यह नहीं है कि उसका इस्तेमाल ही न करें। सेवा के लिए जरूर करें लेकिन अलबेला बनकर, माया के क्षणिक आनंद पाने की इच्छा से या देहधारियों के लगाव-झुकाव के वश अगर इस्तेमाल किया तो वही साँप बनकर अर्थात् माया का विकराल रूप धारण कर पुरुषार्थी को हार खिला देगा, यह निश्चित है।**

कई कहते हैं, हम आज से ही टी.वी देखना तो छोड़ देंगे लेकिन इंटरनेट और मोबाइल के बिना तो आजकल ईश्वरीय सेवा होना मुश्किल है। उसका भी हल किया जा सकता है।

कथा में लिखा है, पांडवों में से सिर्फ अर्जुन ही इस चक्रव्यूह में जाने और विजयी होकर लौटने के राज़ को जानता था। तो अर्जुन कौन? दो बातों से अर्जुन की पहचान दी जाती है। एक, उसका मन-बुद्धि लक्ष्य पर ही सदा केंद्रित रहता था। दूसरा, वह हमेशा भगवान को अपना साथी बनाकर रखता था, उसकी आज्ञानुसार ही हर कदम रखता था। इन दो कारणों से वह दुश्मन के हर प्रकार के षड्यन्त्र को जानता भी था और सदा विजयी भी रहता था।

संगमयुग में अर्जुन कौन है? वही जो माया के हर प्रकार के आक्रमण को जानते हुए, मायावी दुनिया के सर्व साधनों (इंटरनेट, मोबाइल आदि) को सेवा में सफल करते हुए, अपने श्रेष्ठ लक्ष्य से विचलित न हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इन विकारों के अंश से मुक्त, निराकारी-निर्विकारी और निरहंकारी स्वरूप में स्थित, सदा बापदादा का साथी अर्थात् मनमनाभव के श्रेष्ठ आसन पर

सदा विराजमान हो। सामने सदा धर्मराज को रखने से दोहरी सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है।

ज़रा-से भी मन और बुद्धि माया की आकर्षण में आने का लक्षण दिखाई दिया तो समझो, मैं पुण्यात्मा बनने के बजाय पापात्मा बनने जा रहा हूँ। **पाप कर्म का परिणाम है पुरुषार्थहीनता। एक पुरुषार्थी के लिए पुरुषार्थ में हीनता आना मृत्युदंड से भी कठिन सज़ा है** क्योंकि वर्तमान में ज्ञान-गुण-शक्तियों में परमात्मा शिवपिता के समान बनकर उनके दिलतख्त पर विराजमान होना और भविष्य में विश्वराज्य सिंहासन के अधिकारी बनना इन दोनों का आधार ही है संगमयुग का पुरुषार्थ। तो किया हुआ पाप, बुद्धि को ताला लगा देता है अर्थात् याद की यात्रा में एकाग्र होने की बजाय बुद्धि और भी दुनियावी आकर्षणों की कैदी बन जाती है, इसी को कहानी में वीभत्स मृत्यु के रूप में दिखाया है।

तो चक्रव्यूह से बचकर रहने के लिए क्या करना है? सदा अर्जुन बनकर रहना है अर्थात् यह दृढ़ प्रतिज्ञा करनी है कि इन साधनों को सिर्फ ईश्वरीय सेवा और लौकिक-अलौकिक जिम्मेदारी निभाने मात्र ही इस्तेमाल करेंगे न कि मनोरंजन के लिए, न कि मन में छिपी हुई कामनाओं को तृप्त करने के लिए।

❖

बाबा ने ब्रेन की बीमारी को ठीक किया

ब्रह्माकुमार ईश्वर, गेवरा (छ.ग.)

तेईस जून, 2012 को जब सुबह उठा तो मेरा दाहिना पैर लड़खड़ाने लगा। उसके थोड़ी देर बाद दाहिने हाथ में झुनझुनी होने लगी, उसके दो दिन बाद दाहिने हाथ में बिल्कुल ताकत खत्म हो गयी। खाना खाते समय ग्राही ठीक से पकड़ नहीं पाता था। स्थानीय अस्पताल के इलाज से दो माह बाद हाथ में कुछ ताकत आ गयी लेकिन और एक माह दवाई खाने के बाद भी जब ठीक नहीं हुआ तब डॉक्टर ने बड़े अस्पताल जाने की सलाह दी (11 जनवरी, 2013)। वहाँ एम.आर.आई. कराने पर पता चला कि मस्तिष्क में कुछ समस्या है, आपरेशन करना पड़ेगा। उन्होंने वहीं के अपोलो अस्पताल में रैफर किया लेकिन रैफर करने में समय ज्यादा लग गया। तब तक सिर दर्द बढ़ने लगा, आँखों की रोशनी कम होने लगी। चक्कर आने लगे। अमृतवेला उठने पर मेरा बनियान पसीने से भीगा रहता था। चार- पांच दिन के अन्दर मैं बहुत कमजोर हो गया, चलने की ताकत कम हो गई। मेरा मन सेवाकेन्द्र जाने से दूर होने लगा। रात को सोने पर मुझे महसूस हुआ कि कोई मुझसे पूछ रहा है, बच्चे, तुम्हारे साथ कौन सोया है, पता है और जब अमृतवेले उठा तो पसीना बिल्कुल नहीं आया था। मुझे निश्चय हुआ कि बाबा ही मुझसे पूछ रहे थे। फिर सेवाकेन्द्र जाने में मेरा मन लगने लगा।

अठारह जनवरी की सुबह सेवाकेन्द्र में क्लास करने के बाद जब वापस आ रहा था तब निमित्त टीचर बहन ने पूछा, कहाँ जा रहे हैं? मैंने कहा, ड्यूटी जा रहा हूँ। उन्होंने कहा, आपको आज कहीं नहीं जाना है, यहीं योग भट्ठी करनी है। उस दिन मैं सुबह 9 से 12 योग भट्ठी में बैठा। योग के दौरान मुझे तीन बार चमकती हुई लाइट दिखाई दी। अगले दिन सवेरे सो कर उठा तो सिरदर्द बिल्कुल ठीक हो गया था। आँख का दर्द भी बिल्कुल ठीक हो गया था। फिर 11 फरवरी, 2013 को अपोलो अस्पताल में मेरा एम.आर.आई. हुआ। पूरे शरीर का चेकअप हुआ। तब पता चला कि मेरे ब्रेन में जो समस्या थी वह बिल्कुल ठीक हो गयी है। उन्होंने बताया कि आपका ब्लड पतला हो गया है इसलिए आपको कमजोरी आती है। मुझे 6 माह की दवाई मिली है, जो मैं खा रहा हूँ। अभी शरीर में ताकत तेजी से आती जा रही है।

बाबा को मैं दिल से धन्यवाद देता हूँ जो इतनी बड़ी बीमारी को उन्होंने ठीक कर दिया। शुक्रिया बाबा, शुक्रिया। ❖

बाबा ना मिलते तो क्या होता?

● **ब्रह्माकुमार रमनलाल, गाँव गोविन्दपुरा, जिला गुना (म.प्र.)**

मेरा जन्म सन् 1951 में एक संपन्न एवं भक्ति भाव वाले जमींदार परिवार में हुआ। सुबह 5 बजे से 6 बजे तक कीर्तन, फिर स्नान करके गीता का पाठ करना, शाम को 1 घंटा फिर कीर्तन करना, भगवान को भोग लगाना, फिर सबको भोजन कराना – इस प्रकार की नित्य दिनचर्या चलती थी। मैं भी जन्म से ही भक्ति के रंग में रंग गया। मेरे पिताजी के बड़े भाई के कोई संतान नहीं थी, उन्होंने मुझे गोद ले लिया और मेरी शादी कर दी। कक्षा 9 तक पढ़ाने के बाद मेरी पढ़ाई बंद करा दी और कहा, हमें नौकरी नहीं करानी है, हमारे पास ज़मीन-जायदाद बहुत है। मैंने खेती, व्यापार या धंधा कुछ भी नहीं किया। गीता, रामायण, भागवत, भक्तों के चरित्र या धार्मिक किताबें पढ़ना – इन्हीं में समय व्यतीत किया।

भक्ति रस में भूल जाता था संसार

हम दोनों पति-पत्नी का स्वभाव एक-सा मिल गया। हम 20 वर्ष की उम्र से ही वृंदावन जाने लग गये। कई बार तो वर्ष में तीन-तीन बार वृंदावन गये, वहाँ पर रास किया। कथा, भागवत, रामायण तथा मंदिरों के दर्शन करके इतना आनंद आता था कि हम संसार को भूल जाते थे। मुझे सब शास्त्र कंठस्थ हो गये। सब तीर्थ यात्रायें भी हम दोनों ने साथ-साथ कीं। दो बच्चे, एक बच्ची भी आ गये। उनका पालन-पोषण भी पिताजी-माताजी ने ही किया, हम तो हमेशा भक्ति में ही मस्त रहते थे।

भगवान से नाराज़ हो गया

हमारी आखिरी तीर्थ-यात्रा एक मई, 1990 में बद्रीधाम की हुई। बच्चों की शादियाँ हो चुकी थीं। इस यात्रा के बाद मेरी पत्नी को ब्लड कैंसर हो गया और पाँच वर्ष बाद अर्थात् 5 मई 1995 को उसने शरीर छोड़ दिया। सुबह 5 बजे ब्रह्ममुहूर्त में, तिथि एकादशी को मेरे से कहा, तुमने मेरी सब इच्छायें पूरी कर दीं, सब तीर्थ करा दिये, मैं तुमसे पूर्ण संतुष्ट हूँ, ऐसा कहकर शरीर छोड़ दिया। हम दोनों एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। उसका शरीर छूटने से मैं पागल-सा हो गया। भगवान से भी नाराज़ हो गया। गीता, रामायण पढ़ना या भजन-पूजन करना सब छोड़ दिया और नास्तिक विचार हो गये कि भगवान कुछ भी नहीं है, सब एक-दूसरे को पागल बना रहे हैं। मैंने इतना भजन-भक्ति की फिर भी पत्नी मर गई, अब मैं कुछ भी नहीं करूँगा।

शिवरात्रि के दिन अलौकिक जन्म

शिवरात्रि के दिन मैं मन बहलाने

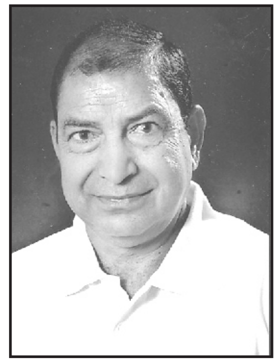

के लिए शिव मंदिर गया और बाहर बैठकर दृश्य देखने लगा। अंदर इसलिए नहीं गया कि मुझे मंदिर और मूर्ति से नफरत हो गई थी। मन में विचार करने लगा कि अंदर क्या है, एक पत्थर का शिवलिंग है, उससे फायदा कुछ भी नहीं है। माता-बहनों के धक्के और लगेंगे, ऐसा विचार करके मंदिर के बाहर बैठ गया। लगभग 4 बजे ब्रह्माकुमारीज़ की प्रदर्शनी दिखाई दी। मैंने सोचा, ये लोग कोई लौकिक धंधे वाले हैं। उनकी तरफ गया तो पाया कि वे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान बता रहे थे। मुझे ज्ञान अच्छा लगा क्योंकि मैं गीता का पाठ करता था, गीता में भगवान ने आत्मा के बारे में बताया है। मैंने उनसे पूछा, क्या तुम परमात्मा के दर्शन करा सकते हो? एक भाई ने कहा, आप हमारे सेन्टर पर चलकर बहनजी से मिलिये, वो आपको ईश्वर के दर्शन करा देंगी। दर्शन करने की

मेरी बहुत तीव्र इच्छा थी। मैंने कहा, इसी वक्त चलिये। मैं उसी दिन 5 बजे गुना सेन्टर पर पहुँच गया। वहाँ बहनजी ने मुझे बड़े प्यार से बिठाया और कहा, तुम बड़े भाग्यवान हो क्योंकि तुम्हारा अलौकिक जन्म आज शिवरात्रि के दिन हुआ है। आज बाबा का भी जन्मदिन है। बहनजी ने कहा, तुम्हें 7 दिन तक सेन्टर पर आकर कोर्स करना होगा, फिर हम तुम्हें परमात्मा के दर्शन करा देंगे। गुना सेन्टर मेरे गाँव से 40 किलोमीटर दूर है, फिर भी मैंने लगातार जाकर कोर्स किया। मुझे शास्त्रों का ज्ञान था इसलिए कोर्स भी जल्दी समझ में आ गया। सेन्टर की निमित्त बहन ने मुझे मधुबन चलने का निमंत्रण दिया। मैंने कहा, बहनजी, मैं कहीं नहीं जाऊँगा, मैंने सब देख लिया है। बहनजी ने मेरे मना करने पर भी मेरे कल्याण के लिए मेरा रिज़र्वेशन करा दिया और मुझे उनके साथ मधुबन जाना पड़ा।

शंकायें बिना पूछे हल हो गईं

जैसे माँ अपने बच्चे का ध्यान रखती है, ऐसे ही बहन जी खिलाते-पिलाते बड़े आराम से मधुबन ले आई। हम लगभग 20 भाई-बहनें थे। रेलवे स्टेशन पर ही आश्रम की बसें हमें लेने आ गईं। बसों के नाम (पुष्पक विमान) देवताओं के विमानों के नाम पर थे। हमें ज्ञान सरोवर में ठहराया गया जो पहाड़ों के बीच बहुत अच्छी जगह है। ज्ञान सरोवर में जो ज्ञान मिला, उससे मेरे दिल में जो था, वह सब स्पष्ट हो गया। परमात्मा के बारे में जो अज्ञान था, सब मिट गया। जो मेरी शंकायें थी वो बिना पूछे ही हल हो गईं।

जीते जी पाया स्वर्ग

मेरे घर से फोन गया कि तुम कैसे हो? मैंने कहा कि मैं स्वर्ग में हूँ। मरने के बाद स्वर्ग मिले या ना मिले लेकिन जीते-जी स्वर्ग देखना हो तो मधुबन आ जाओ। शान्तिवन में मैंने देखा, एक हॉल जिसमें 20 हजार भाई-बहनें एक-साथ बैठकर बाबा का ज्ञान सुनते हैं, हॉल में बीच में एक भी खंभा नहीं है। भोजन के लिए तीन मंजिला भवन है जिसमें 20 हजार भाई-बहनें एक साथ भोजन करते हैं। ठहरने के लिए सबको अलग-अलग पलंग, बिस्तर दिया गया जैसे हमारे घरों में रहता है। कमरों में या हॉल में ताला नहीं लगाया जाता है। कोई किसी का सामान नहीं चुराते हैं। सफाई करने के लिए जो भाई-बहनें आते हैं, वो भी किसी का सामान नहीं चुराते हैं। अगर किसी का सामान खो जाये तो खोया-पाया विभाग में मिल जाता है। बाथरूम इतने साफ रहते हैं जैसे कि हमारे घरों में रहते हैं। घर से भी अच्छी व्यवस्था ठंडे और गर्म पानी की रहती है। बाथरूम इतने हैं कि एक साथ नहाने में भी कोई दिक्कत नहीं होती है। माता-बहनों के लिए ठहरने की अलग व्यवस्था है। बड़े-बड़े भवन बने हुए हैं जिन पर स्वर्ग के देवताओं के भवनों के नाम लिखे हैं।

आपस में प्यार की भाषा

बाबा के भण्डारे में सुबह 3 बजे से रात 11 बजे तक जिसको जो खाना-पीना हो, खा सकते हैं। चाय, कॉफी, दही, छाछ, खीर, पूरी, पराठा, रोटी, हलवा, पकौड़ा यानि जो अपने घर में मिलता है, वह बाबा के भंडारे में भी मिलता है। मिनरल वाटर जो हम 15 रुपये में बोतल खरीदते हैं, वह सब बाबा के घर नि:शुल्क मिलता है। सोते समय 9 बजे अच्छा दूध मिलता है। दवाई यानि इलाज भी फ्री होता है। शांतिवन, मधुबन, ज्ञान सरोवर सब जगह आने-जाने के लिए बाबा की बसें फ्री चलती हैं। जगह-जगह भाई-बहनों के लिए झूले लगे हुए हैं। सब आपस में बड़े प्यार से बोलते हैं, कोई किसी से झगड़ा नहीं करता है। सफाई इतनी रहती है कि आप कहीं भी कचरा-गंदगी नहीं देख सकते। मैं कलम से मधुबन का पूरा वर्णन लिख नहीं सकता लेकिन स्वर्ग देखना हो तो एक बार मधुबन ज़रूर जाइये।

मैं सब भाई-बहनों से निवेदन करता हूँ कि जितना जल्दी हो सके, ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर जाकर 7 दिन का कोर्स करके अपना जीवन सफल कर लो। अब भटकने के लिए समय नहीं है। हमें अपने आपको जानना है, यही जीवन का लक्ष्य है। ❖

पके बाल

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

जब सिर के बाल सफेद होने लगते हैं तो इसे बालों का पकना कहा जाता है। अधिकतर फल भी पकने के बाद रंग बदल लेते हैं। आम, बेर आदि कच्चे होते हैं तो हरे रंग के होते हैं, जब पक जाते हैं तो पीले या लाल रंग के हो जाते हैं। इसका साधारण अर्थ यह हुआ कि जब बाल काले थे तो हम कच्चे थे, बाल सफेद हुए तो हम भी पक गए।

पकने पर बढ़ जाती है कीमत

हम देखते हैं कि कच्चे फल बहुत संख्या में लगे होते हैं परन्तु पकने तक पहुँचते-पहुँचते कई झड़ जाते हैं, कइयों को कीड़े खा जाते हैं, कई पंछियों द्वारा कुतर दिए जाते हैं, कई यूँ ही टूट कर गिर जाते हैं, तुलनात्मक रीति से कम फल ही पककर किसी भोग की थाली की शोभा बढ़ाते हैं या किसी के उदर की क्षुधा शान्त करते हैं। जो उपयोगिता और कीमत पके फल की होती है वह कच्चे की हो ही नहीं सकती। कच्चे फल अचार, मुरब्बे, चटनी, सब्जी के काम तो आ सकते हैं पर असली उपयोग तो पकने के बाद ही दे पाते हैं इसलिए उनकी कीमत अधिक होती है।

गौरवान्वित करती है सफेदी

क्या यही बात मनुष्यों पर भी लागू नहीं होती? प्रतिदिन लाखों मानव आत्माएँ शरीर धारण करती हैं परन्तु कुछ गर्भावस्था में, कुछ संसार में आँखें खोलने के बाद, कुछ बाल्यावस्था में, कुछ किशोर होते-होते और कुछ भरी जवानी में भी काल कलवित हो जाते हैं। **पके बालों तक पहुँचने वाले भाग्यशाली ही होते हैं। शरीर पर आने वाले रोग, शोक, प्राकृतिक विपत्तियों के वार, दुर्घनाओं से बचकर इस पड़ाव तक पहुँचना भाग्य नहीं तो और क्या है इसलिए यह बालों की सफेदी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करने के लिए है कि हम अपने को बचाते-बचाते काले बालों वाली लाइन पार कर सफेद बालों के क्षेत्र में प्रवेश हो चुके हैं। यह भी गुप्त रूप में उन्नति ही है।**

समय से पहले अनुभवी होने की निशानी

संसार अपवादों से भरा पड़ा है। इस विषय में भी अपवाद कम नहीं हैं। कई लोग पैदा ही पके बाल लेके होते हैं और कइयों की कच्ची उम्र में ही बाल पक जाते हैं। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि सारी सृष्टि ही वृद्धावस्था में अथवा पकी अवस्था में है जिसका असर कुछ लोगों पर जन्म से ही या कच्ची आयु में ही दिखना शुरू हो जाता है। ऐसे लोगों को भी सन्देश है कि वे इसे परेशानी नहीं बल्कि समय से पहले अनुभवी होने की प्राकृतिक निशानी मानें।

एक-एक बाल लिए है अनुभव की कहानी

कुछ लोग दर्पण के सामने बैठकर सफेद बालों को उखाड़ने या दूसरों से उखड़वाने की कवायद करते हैं। ऐसे लोगों से हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि एक-एक सफेद बाल में आपके जीवन के एक-एक अनुभव की कहानी लिखी हुई है। बाल उखाड़ना माना उन अनुभवों को उखाड़ फेंकना। **सोचिए तो सही, जीवन-यात्रा में आगे बढ़ते कभी सुनना पड़ा, कभी समाना पड़ा, कभी झुकना और त्याग करना पड़ा, जाने क्या-क्या सहन करना पड़ा...। ये घटनाएँ घटती गईं, हम पार करते गए और सफेद बालों रूपी एक-एक पिल्लर इनके साक्ष्य के रूप में सिर में गड़ता गया। तो क्या आप उस साक्ष्य को उखाड़ फेंकेंगे? बिना साक्ष्य के कौन आपको अनुभवी मानेगा? कौन आपको उतार-चढ़ाव देखा हुआ समझेगा? इसलिए इन्हें गड़े रहने दीजिए और देख-देख हर्षित होते रहिए कि आपके किए का प्रमाण आपके पास है।** यदि कोई चुनौती देता है कि आपने जीवन में किया ही क्या है, तो झट उत्तर दिया जाता है कि ये बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं। धूप में नहीं किए तो अवश्य ही अनुभवों से किए हैं। धूप में करना तो आसान है, अनुभवों से करना मुश्किल है। तो मुश्किल से किए

कार्य की, उसकी निशानी की कद्र कीजिए। उन्हें देख प्रसन्न होइये, बौखलाइये नहीं।

इस बात में भी अपवाद की सम्भावना है। कुछ लोगों के बाल बहुत अनुभवी होने के बाद भी काले रहते हैं। सतयुग-त्रेतायुग में देवतागण भी 150 वर्ष आयुष्य भोगने के बाद भी बालों की सफेदी से बचे रहते हैं। कलियुग में जो लोग बहुत बड़ी आयु तक भी बालों की सफेदी से बचे रहते थे, उनके शरीर में किसी विशेष हारमोन की अधिकता हो सकती है जो बालों का कालापन बनाए रखने में सहायक हों। इसे वे अपने शरीर पर तमोगुणी प्रकृति का कुछ कम प्रभाव समझकर गौरवान्वित हो सकते हैं।

सफेद कर लीजिए चित्त को भी

कुछ लोग सफेद बालों को उखाड़ते नहीं पर खिजाब या मेहन्दी आदि से रंगने की कोशिश करते हैं। वैसे तो प्रकृति की वास्तविक देन छिपाई नहीं जा सकती पर धन, समय और शक्ति को कुर्बान करके अल्पकाल के लिए उन्हीं पदचिन्हों को मिटाने की नाकाम कोशिश की जाती है जो उनके अपने पैरों के हैं। यह सफेदी तो मन के सफेद होने का सन्देश लेकर आई है कि जवानी में, काले बालों के नशे में यदि जाने-अनजाने काले कर्मों का कालापन लग गया हो तो अब बालों के सफेद हाने के साथ-साथ अपने चित्त को भी सफेद कर लीजिए।

बाल तो प्रकृति सफेद कर देती है परन्तु चित्त को सफेद करने के लिए स्वयं मेहनत करनी पड़ती है। चित्त को सफेद करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि चित्त कहते किसे हैं, यह है कहाँ? हम इस शब्द का कई बार प्रयोग करते हैं। हम कहते हैं, मेरे तो मन-चित्त में भी नहीं था, फिर भी अमुक कार्य हो गया।

मन आत्मा की एक शक्ति है और चित्त है अप्रत्यक्ष मन जिसे सब कॉन्शियस (Sub-conscious) मन या संस्कार कहते हैं। कई बार इन्हें ऊपरी मन और भीतरी मन भी कहा जाता है और कई बार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मन भी कहा जाता है। मन और संस्कारों को धवल करने में दिव्यबुद्धि का बड़ा महत्त्वपूर्ण पार्ट है। दिव्यबुद्धि मिलती है बुद्धिवानों की बुद्धि परमपिता परमात्मा से। बुद्धि, नेत्र का भी काम करती है। जब बुद्धि रूपी नेत्र से परमधाम में विराजमान परमात्मा पिता को निहारा जाता है और उनसे आती शक्ति और स्नेह की किरणों में अपने आत्मिक अस्तित्व को डुबो दिया जाता है तो मन और चित्त की धुलाई हो जाती है। इस नए सुख के अनुभव से पुराने दुख, पुरानी स्मृतियाँ और पुराने संस्कार मिट जाते हैं। आत्मा (मन, बुद्धि, संस्कार सहित) उजली, पावन, सशक्त हो जाती है। फिर आयु के साथ होने वाले शारीरिक परिवर्तन चिन्तित या शर्मसार नहीं करते बल्कि प्रकृति की जिस योजना के तहत ये परिवर्तन होते हैं उसे स्वीकार करने, उससे फायदा उठाने, उसे देख आनन्दित होने की हिम्मत आ जाती है। ❖

कुछ ऐसा कर जाऊँ

बी.के रश्मि, गुमला (झारखंड)

है चाहत मेरी अब तो बाबा,
मैं कुछ ऐसा कर जाऊँ।
सदा रहे मुस्कान बनी ये,
ऐसा वर मैं पा जाऊँ।।

प्रत्यक्ष करूँ मैं आपको बाबा
चहुँ दिशा चहुँ ओर।
और धरा पर उतार लाऊँ
फिर से स्वर्णिम भोर।।
है चाहत मेरी.......

रह ना जाए कोई कोना
जहाँ हो दु:ख का शोर।
मिलें जमाने की खुशियाँ सब
नाच उठे मन मोर।।
है चाहत मेरी.....

हो साक्षीद्रष्टा, बन कर्मयोगी
स्व-परिवर्तन मैं कर पाऊँ।
देवत्व खुद में जगाकर
तपस्वीमूर्त मैं बन जाऊँ।।
है चाहत मेरी........

स्नेह संस्मरण

● ब्रह्माकुमार मधु, मुम्बई (गामदेवी)

ब्रह्माकुमारी डॉ. अनिला बहन जी ने 14 अप्रैल, 2013 को अहमदाबाद में शरीर छोड़ा। मैं और रमेश भाई जी मिलकर उनके स्नेह भरे संस्मरण लिख रहे हैं।

मैं अनिला बहन जी एवं रमेश भाई जी की मौसी का बेटा (रमेश जी का मौसेरा भाई) हूँ। भावनगर से मैट्रिक की परीक्षा पास कर बम्बई में शान्ता माता (रमेश जी की माताजी) के घर रहने आया। ब्रह्मा बाबा ने शान्ता माता को श्रीमत दी थी कि वे मुझे (मधु को) अपने बेटे की तरह पालना दें। इस तरह मैं अनिला बहन के सगे भाई जैसा हूँ अर्थात् परिवार का सदस्य हूँ।

अनिला बहन मई, 1952 से ही शिवबाबा के परिवार के संबंध में आई और अगस्त, 1952 में शान्ता माता के साथ मधुबन में बाबा से मिलने गई। सन् 1953 में ब्रह्मा बाबा गुर्दे के इलाज के लिए बम्बई आये थे। हमारा सारा परिवार ब्रह्मा बाबा से मिलने गया। तब ब्रह्मा बाबा ने ऑफर किया कि बाबा पवित्रता का तिलक दे रहा है, कौन स्वीकार करेगा? जो इसे स्वीकार करेगा, सतयुग में विश्व महाराजन बनेगा। रमेश भाई तब इस ज्ञान को इतना जानते नहीं थे लेकिन अनिला बहन ने एक सेकण्ड में ब्रह्मा बाबा से पवित्रता का तिलक लिया और उसे जीवन भर निभाया। अनिला बहन सभी दैवी बहनों एवं भाइयों तथा ब्रह्मा बाबा तथा मम्मा की भी डॉक्टर बन गई।

एक बार ब्रह्मा बाबा आबू जा रहे थे तभी अनिला बहन ने बाबा की आँखों की जाँच करवाई। डॉक्टर की इच्छा हुई कि आँखों की पूरी जाँच करें इसलिए उन्होंने सुबह 9 बजे से लेकर दोपहर 2.30 बजे तक जाँच की। फिर डॉक्टर ने अनिला बहन को कहा कि बाबा की आँखें बिल्कुल परफेक्ट हैं। उस पर अनिला बहन जी ने कहा कि ब्रह्मा बाबा का पूरा ही जीवन सौ प्रतिशत परफेक्ट है।

जब मातेश्वरी जी को कैंसर था, अनिला बहन ने मातेश्वरी जी की टाटा हॉस्पिटल में चैकिंग और ऑप्रेशन करवाया। ऑप्रेशन के बाद मातेश्वरी जी बैंगलोर, पूना गये। बम्बई वापिस आने के बाद अनिला बहन ने जब मातेश्वरी जी की पुनः जाँच करवाई तो डॉक्टर ने बताया कि मातेश्वरी जी का कैंसर फेफड़ों की तरफ जा रहा है, अब इनकी आयु 3-4 महीना ही बाकी रही है। उन 3-4 महीनों में अनिला बहन ने मातेश्वरी जी की बहुत प्यार से अथक होकर सेवा की और बम्बई से आबू में सुरक्षित पहुँचा दिया।

दादा विश्व किशोर के प्रोस्टेट (Prostate) के ऑप्रेशन के समय

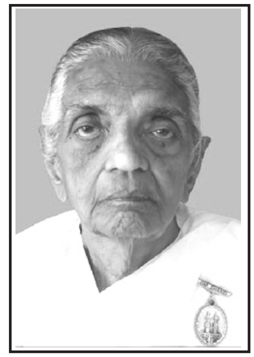

अनिला बहन ने उनकी पूरी सेवा की। भ्राता निर्वैर जी की जब बाय-पास सर्जरी (bypass surgery) हुई तब ऑपरेशन थियेटर में वह पूरा समय रही। इस प्रकार वे निःस्वार्थ सेवाधारी बनकर हरेक की सेवा करती थी।

दादी पुष्पशांता, गोपीडिंबू, आत्ममोहिनी दादी, बृजइन्द्रा दादी तथा अन्य दादियों की मेडिकल चिकित्सा में अनिला बहन ने बहुत-बहुत सेवा की। दादी गुलजार का जब कैंसर का ऑपरेशन हुआ तब भी अनिला बहन ऑपरेशन थियेटर में सारा समय दादी गुलजार का हाथ पकड़ कर खड़ी रही। काफी समय तक रोज दादी गुलजार के पास जाकर उनकी सेवा की।

इसका मतलब यह नहीं कि वे ईश्वरीय सेवा नहीं करते थे। यज्ञ का पहला-पहला गीत 'वसुधा के इस आँचल में...' जो ललित सोढ़ा जी ने गाया, उनके कमरे में ही रिकॉर्ड हुआ। इस की रिकॉर्डिंग के लिए उन्होंने बहुत सहयोग दिया। उनको गीतों का बहुत शौक था। बाबा के

रात्रि क्लास में गीत गाते थे और साथ-साथ रमेश भाई भी गीत गाते थे।

मैंने अनिला बहन के साथ पूरा जीवन व्यतीत किया परन्तु कभी उन्हें किसी पर क्रोध करते हुए नहीं देखा। जो भी पेशेन्ट्स आते थे, चाहे रात हो दिन, उन्हें देखती और दवाई आदि देती थी। उनकी फीस भी बहुत कम थी इसलिए साधारण व्यक्ति भी दवाई लेने के लिए उनके पास ही आते थे। मुंबई में उनका दवाखाना मुस्लिम क्षेत्र में था, इस कारण उन्होंने मुस्लिम बहनों की बहुत सेवा की।

अनिला बहन और ऊषा बहन 10-12 वर्ष पूर्व लन्दन गये थे। वहाँ के समाचारपत्रों में जयन्ती बहन ने उनके आगमन के समाचार डाले थे जिन्हें पढ़कर अनेक मुस्लिम बहनें अनिला बहन से मिलने आयी थीं। वे अपने साथ अपने बेटे-बहू, पोत्रे-पोत्रियों को लायी थी जिन्हें वे कहती कि डॉ. अनिला के चिकित्सा उपचार (Medical treatment) के कारण आपका जन्म सरलता से हुआ। जब वे अमेरिका में लॉस-एंजिल्स में गई तो वहाँ भी मुस्लिम बहनें उनसे मिलने आईं। अनिला बहन ने उन्हें दादी गुलजार के बारे में बताया। एक महिला ने कहा, गुलजार शब्द तो पर्शियन है। तब अनिला बहन ने कहा कि यह नाम बाबा ने रखा है। फिर उस महिला ने पूछा, क्या आपका बाबा पर्शियन भी जानता है? अनिला बहन ने कहा, हमारा बाबा सभी संस्कृति, सभी भाषायें जानता है, यह सुनकर वह बहुत खुश हुई।

सन् 1956 से 2008 तक उन्होंने न केवल मेडिकल चिकित्सा की परन्तु साथ-साथ सभी को ईश्वरीय संदेश देने की सेवायें भी कीं। उस क्षेत्र के सभी मुस्लिम भाई खास व हिन्दू भाई आम अनिला बहन को देवी के रूप में मानते थे।

लौकिक परिवार वाले भी घर की समस्याओं के समाधान के लिये उनके पास आते थे। मेरी बीमारी में भी अनिला बहन डॉक्टर्स के पास जाकर दवाई आदि करती रही।

शान्ता माता और ऊषा बहन के जाने के बाद से अनिला बहन घर का सारा कारोबार सम्भालती थी। साथ ही साथ गामदेवी सब-जोन की बहनों को भी पालना देती थी।

शरीर छोड़ते समय भी वे सहजता से देह से न्यारी हो गईं। बाद में उनके निमित्त जब शिवबाबा को भोग लगाया गया तो भोग के संदेश में मालूम पड़ा कि अनिला बहन ने बाबा से पूछा कि मुझे क्यों बुलाया? बाबा ने कहा कि बाबा ने आपको सेवा के लिए बुलाया। तो अनिला बहन ने कहा कि बाबा, मैं तो सेवा करती थी न! तो बाबा ने कहा, आपको एडवान्स पार्टी में जाकर बालक के रूप में सेवा करनी है। आपका नया घर आपके वर्तमान घर से हज़ार गुणा अधिक समृद्ध और सम्पन्न होगा। उन्हें बाबा के घर आबू में लाओगी और आकर के सभी दादियों से एवं रमेश भाईजी से भी मिलोगी। ऐसे उन आत्माओं को वारिस और माइक क्वालिटी आत्मायें बनाओगी। फिर अनिला बहन ने बाबा से कहा कि बाबा, मेरी माँ ने 101 वर्ष की आयु में शरीर छोड़ा और मैंने सिर्फ 83 वर्ष की आयु में छोड़ा तो मेरी बची हुई 18 साल की आयु रमेश भाई को दे देना। इस प्रकार उन्होंने अपने भ्रातृभाव को भी प्रकट किया।

उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति यज्ञ-सेवा में दे दी। इसके लिए यज्ञ का तपोवन में जो दर्शनीय स्थल बनने जा रहा है उसमें प्रारंभिक (Seed Money) रूप में यह धन लगे, यह भी उम्मीद है। यह दर्शनीय स्थल ईश्वरीय सेवा में चार चाँद लगायेगा।

मैं अनिला बहन से छोटा और रमेश भाई से बड़ा हूँ। रमेश भाई जी आबू एवं अन्य स्थानों की सेवाओं में बहुत व्यस्त रहते हैं। मैं यहाँ घर में ही रहकर धन्धा आदि करता हूँ तो मुझे अनिला बहन के साथ रहने का ज़्यादा समय मिला और मैं उन्हें बहुत अच्छी रीति से जानता हूँ।

ऐसी अथक, निर्माणचित्त, नम्रचित्त, नि:स्वार्थ प्रेम, त्याग एवं तपस्या की मूर्ति, गुप्त सेवाधारी बहन को मेरी हृदयपूर्वक, स्नेहपूर्ण श्रद्धांजलि! ❖

मर्यादाओं का उल्लंघन मत करिए

● **ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस**

जिस प्रकार किनारों के बाहर बहने वाली नदी हो या सागर, किसी का भला नहीं कर सकते, वे जहाँ से भी बहेंगे अधिसंख्य का अनर्थ ही करेंगे, उसी प्रकार मनमत पर चलकर नियम अथवा मर्यादाओं का उल्लंघन करने वालों को अल्पकाल का लाभ अवश्य दिखाई देता है परंतु दुष्परिणाम अधिक और दूरगामी होते रहे हैं। ऐसे लोगों की स्थिति अधिकांशत: ऐसी होती है कि वे मुख से गाते हैं और दिल से रोते हैं। ऊपर से लगेगा कि कितने खुश हैं और दूसरों को खुश करते हैं परंतु स्थिति लगभग एक सर्कस के जोकर की तरह हो जाती है जो अपने करतबों से दूसरों को तो हँसाता है परंतु उसका हाल-ए-दिल पूछो तो वह मायूस मिलता है। यादगार शास्त्र रामायण में दिखाया है कि सीता द्वारा मर्यादा उल्लंघन की गई तो वह दुखों में फँस गई।

अमर्यादा छोड़ नम्र बनिये

किसी कारणवश किसी को अगर अवसर नहीं मिलता तो हीनभावना लाने की या अमर्यादित होने की आवश्यता ही क्या है? हाँ, नम्रतापूर्वक अपनी बात रखी जा सकती है। इस संदर्भ में एक प्रेरक प्रसंग है – तत्कालीन कोलकाता के प्रेसीडेन्सी कालेज में दाखिले से पहले प्रवेश परीक्षा में सफल होना ज़रूरी था। उस कालेज के प्राचार्य यूरोपियन थे। सन् 1906 में वे परीक्षा का परिणाम घोषित कर रहे थे। सूची के सभी नाम घोषित कर दिये जाने पर क्लास के कोने में बैठा एक विद्यार्थी उठ खड़ा हुआ। उसने नम्रतापूर्वक कहा, सर, आपने मेरा नाम घोषित नहीं किया? प्राचार्य ने कहा कि असफल विद्यार्थियों का नाम इस सूची में नहीं होता। उस विद्यार्थी ने कहा कि सर, मुझे यकीन है कि मैंने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये होंगे। यह सुनकर प्राचार्य नाराज़ हो गये और उन्होंने 10 रुपये दंड के रूप में देने का आदेश दे दिया। तभी कालेज का क्लर्क दौड़ता हुआ आया और कहा कि सर, यह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाला विद्यार्थी है, इसका नाम गलती से सूची में नहीं है। प्राचार्य ने विद्यार्थी की ओर देखा तो उसका चेहरा आत्मविश्वास से दमक रहा था। यही विद्यार्थी स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद बने। कॉपी में उनके परीक्षक ने लिखा, **परीक्षक से परीक्षार्थी अधिक योग्य है।**

गुण प्रकट अवश्य होते हैं

अत: बहुत अधिक ज़िद्द और सिद्ध करने की बजाय आत्मविश्वास को साथी बनाओ, अभिमान का त्याग करो और अपने स्वमान में स्थित रहो। सारे संसार का कल्याण करने से पहले स्वयं के कल्याण की भी तो सोचो। स्वयं का कल्याण होने पर दूसरों का कल्याण स्वत: ही हो जायेगा। शरीर के आने-जाने की सीमायें होती हैं लेकिन मन में सर्वे भवन्तु सुखिन: की भावनाओं की तो कोई सीमा ही नहीं है। मनसा सेवा सारे जगत का एक ही साथ कल्याण करा सकती है। **'रहिमन हीरा कब कहे लाख टका मेरो मोल' लोग हीरे का मूल्य उसकी चमक के आधार से निर्धारित करते हैं, हीरा कभी अपनी कीमत नहीं बताता। वह तो जहाँ भी रखा जायेगा अपना नूर ही बिखेरेगा। किसी राजा के सिर के ताज में होगा तो भी चमक बिखेरेगा, धूल में पड़ा होगा तो भी चमक बिखेरेगा, किसी कब्र पर लगा होगा तो भी चमक ही बिखेरेगा। इसी तरह जले हुए दीपक का कार्य भी प्रकाश देना है, वह जहाँ भी जलेगा प्रकाश ही देगा। अगरबत्ती जहाँ भी जलेगी सुगंध ही देगी। पुष्प जहाँ भी होगा, खुशबू ही बिखेरेगा। किसी कूड़े के ढेर पर पटक दोगे तो भी खुशबू देगा, शव पर श्रद्धांजलि दोगे तो भी खुशबू ही देगा, मसल दोगे तो भी खुशबू ही देगा।** इसलिए हे मास्टर ज्ञानसूर्य, नाम-मान-शान के अल्पकालीन टिमटिमाते दीपकों से स्वयं को प्रकाशित करने का क्षुद्र संकल्प मत करो। तुम्हें ही मर्यादाओं में चलने वाला मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है। जब तुम ऐसा बन जाओगे तो लोग तुम्हें इस रूप में याद रखेंगे। तुम संसार के लिए पूज्यनीय बन जाओगे। अत: हे शान्तिदूत, अपनी मर्यादा में रहो, किसी मर्यादा का उल्लंघन मत करो।

ऐसा निश्छल निःस्वार्थ प्रेम और कहाँ!

● ब्रह्माकुमारी सुमन चोपड़ा, सरिता विहार, नई दिल्ली

मैं एक शारीरिक रोग से ग्रस्त थी, समाधान नहीं मिल रहा था, टैस्ट सब ठीक थे इसलिए डाक्टर भी कुछ नहीं कर पा रहे थे। ऐसे में इन्सान भगवान की शरण खोजता है। लेकिन, मंदिर में जाकर भी एक ही आवाज़ अंदर से आती थी कि मंदिर मेरी मंज़िल नहीं है। फिर प्रश्न उठता था, यहां नहीं है तो फिर कहां है? इसका उत्तर नहीं आता था।

शान्ति कहाँ है

अध्यापिका होने के साथ-साथ कपड़ों को नया रूप देना मेरा शौक रहा है। मंदिर में भी मैं देवी की प्रतिमा को गौर से देखती थी कि इनकी ड्रैस कैसी है, रंगों का चुनाव कैसा है? एक दिन ऐसे ही पोशाक देखते-देखते मुझे देवी के माथे पर लाल लाइट दिखाई दी। बड़ा आश्चर्य हुआ। समझ में कुछ नहीं आया पर एक उत्तर मिला कि क्यों न मैं अपने को स्वस्थ बनाने के लिए योग सीखूँ ? बस, इसी सोच से प्रेरित होकर मैंने आस्था चैनल ऑन किया (जो पहले मैंने कभी नहीं किया था)। प्रोग्राम का अंतिम चरण चल रहा था और दोहराया जा रहा था कि ''शांति कहां है, वह तो अपने अंदर है''। बस, ये लाइनें मेरी उत्सुकता को बढ़ाने वाली सिद्ध हुईं। वहां दिए सभी फोन नम्बरों पर सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करने लगी। लगभग दो घंटे के परिश्रम के बाद मदनखादर सेंटर का पता और नम्बर प्राप्त करने में सफलता मिल गई। बहन ने मुझे दो दिन बाद आने का समय दिया। इन्तज़ार लम्बा पर सुखद था। निर्धारित दिन समय से पहले ही पहुँच गई। यकीन कीजिए, वहां पहुँचने से पहले मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था की बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।

अविरल स्नेह-धाराएँ

मैंने पहले ही दिन दीदी से योग सीखने की उत्सुकता ज़ाहिर की और वे मुझे बाबा के कमरे में ले गई। जाते ही मुझे लगा जैसे कि साक्षात् पिता मेरे सामने बैठे हों (मैं अपने लौकिक पिता को खो चुकी हूँ)। मैं चित्र में पूरी तरह से डूब गई क्योंकि उनमें से अविरल स्नेह की धाराएँ निकल कर मुझ तक पहुँच रही थीं, मानो वे कह रहे हों, बच्ची, तुम आ गई, मेरे पास आने के लिए किसी माध्यम की जरूरत नहीं, जब चाहो तब आ सकती हो। ऐसा प्यार ! मेरे सारे प्रश्न समाप्त हो गए, मुझे रोज़ नए-नए अनुभव होने लगे, मेरा उमंग-उत्साह बढ़ने लगा। यह उत्साह ही मन को शीतल बनाने में मददगार सिद्ध हुआ। मैंने भगवान को अपना पिता, अपना साथी बना लिया,

फिर मुझे सब कुछ सम्भव लगने लगा।

ज्ञान स्व परिवर्तन सिखाता है

फिर एक दिन मैंने ब्रह्मा बाबा के मस्तक पर, मुरली क्लास के दौरान वही लाल लाइट देखी, जो देवी की भ्रकुटि में देखी थी। अब ज्ञान-योग के विषय अच्छी तरह समझने-सीखने के उद्देश्य से मेरा विद्यार्थी जीवन प्रारम्भ हो गया। मैंने महसूस किया कि ज्ञान हमें स्व परिवर्तन सिखाता है। ज्ञान-मार्ग में हम प्रभु से यह प्रार्थना नहीं करते कि हमें बुराइयों से पार ले चलो बल्कि यह संकल्प करते हैं कि हमें बदलना है। पुरुषार्थ हमें ही करना है। इसके लिए ईश्वरीय आज्ञा का पालन करना है, तभी परिवर्तन सहज है। राजयोग जो बाबा हमें रोज़ सिखा रहे हैं, हमारे विकारों को निकाल हमारी मनसा को पवित्र बनाता है, 'सादा जीवन, उच्च विचार' का लक्ष्य बताता है।

हर प्रश्न का उत्तर देती है मुरली

आज तनाव के कारण अनेकों

का जीवन दुखमय है। शारीरिक रोग तो केवल रोगी को ही सताते हैं लेकिन मानसिक रोग तो पूरे समाज में उथल-पुथल पैदा कर देते हैं। ऐसे में शुद्ध मनसा द्वारा शुभकामना, शुभभावना प्रेषित कर संसार के किसी भी कोने में बैठे प्राणी को निरोगी बनाया जा सकता है। इसके लिए हमें श्रीमत पर चलना है, अंदर से व्यर्थ को समाप्त करना है। मनुष्य के गुणों का निखार भी राजयोग से ही होता है। पवित्रता, खुशी, सुख, शक्तियाँ स्वाभाविक रूप से आत्मा में भरना शुरू हो जाती हैं। मुरली वास्तव में परमात्मा के महावाक्य हैं जिन्हें हम रोज़ सुनते हैं। यही आत्मा की खुराक है। मुरली मन में आए हर संशय, हर प्रश्न का उत्तर देती है और पढ़ने वाले के हाव-भाव ही बदल देती है। इस महसूसता से मुरली सुनने की चाहना बढ़ गई और मुरली से बेहद प्यार हो गया।

साकार-निराकार स्नेह की अनुभूति

भगवान जिन्हें हम प्यार से बाबा कहते हैं, की गोद के साथ-साथ मुझे ईश्वरीय परिवार का बेहद प्यार मिला। यहां हर बहन व भाई ने ज्ञान में आगे बढ़ाने में मेरी बहुत मदद की। ऐसा निश्छल, नि:स्वार्थ प्रेम और कहां मिल सकता है! उनके सहयोग से ज्ञान-योग की बारीकियां सीख पाई, धारण कर पाई। माउंट आबू में तो मुझे और भी प्राप्तियां हुईं। यहां साकार, निराकार दोनों रूपों से ही स्नेह की अनुभूति हुई। वहां योग लगाना कितना सहज है, अवस्था हमेशा योगयुक्त रहती है। बाबा की नज़र हमेशा अपने बच्चों पर ही रहती है।

आप सब से अनुरोध करती हूँ कि आप भी नज़दीकी सेवाकेन्द्र में जाकर, बाबा (भगवान) को पहचानकर जीवन को खुशियों से भरपूर कर लें। ❖

क्रोध नहीं, क्षमा

● **ब्रह्माकुमारी राजरानी, इलाहाबाद**

एक राजा को पक्षी पालने का शौक था। पाले गए पक्षियों में चकोर उन्हें अत्यंत प्रिय था। वे उसे अपने हाथ पर बैठाये रहते और कहीं भी जाते तो साथ ही ले जाते। एक बार राजा वन में शिकार करने गये, उनका घोड़ा दूसरे साथियों से आगे निकल गया, वे वन में भटक गये, बहुत प्यास सताने लगी। पानी की खोज में भटकते हुए उन्होंने देखा कि एक चट्टान की सन्धि से बूंद-बूंद करके पानी टपक रहा है। राजा ने एक प्याला निकाला और टपकते पानी के नीचे रख दिया। कुछ देर में प्याला भर गया। राजा ने जैसे ही पीने के लिए उठाया, कंधे पर बैठे चकोर ने उड़कर, पंख मारकर प्याला लुढ़का दिया। राजा को बहुत क्रोध आया किन्तु संयम रखकर प्याला पुन: रख दिया भरने के लिए। बड़ी देर में प्याला फिर भरा। इस बार भी जैसे ही पीने चले, चकोर ने फिर पंख मारकर गिरा दिया। क्रोध के मारे राजा ने चकोर को पकड़ा और गर्दन मरोड़कर मार डाला।

चकोर को नीचे फेंक कर उन्होंने सिर ऊपर उठाया तो सहसा उनकी दृष्टि चट्टान की सन्धि पर पड़ी। वहाँ एक मरा सर्प दबा था और उसके शरीर से स्पर्श करता हुआ यह जल टपक रहा था। राजा काँप उठे, हाय! जल पी कर मैं मर जाता। बेचारे पक्षी ने दो बार जल गिराया और मैंने क्रोध में इसी को मार डाला।

राजा जीवन भर पश्चाताप की अग्नि में जलते रहे। राजा और पक्षी की इस कहानी से हमें यही सीखना है कि क्रोध का परिणाम हमेशा ही बुरा होता है। कई बार ऊपर से गलती दिखती है पर अन्दर गुप्त कल्याण भी समाया रहता है। अध्यात्म हमें वह गुप्त कल्याण देख पाने का नेत्र प्रदान करता है। और यदि किसी ने सचमुच गलती की हो तो भी उसे क्षमा करना ही श्रेष्ठ हथियार है। क्षमा का परिणाम कभी बुरा नहीं निकलता। ❖

मोटरसाइकिल और बाबा

● **डॉ.विनय कुमार कश्यप, इटावा**

मैं जिस शहर में रहता हूँ, वहाँ चारों तरफ असुरक्षा का माहौल है। स्थिति ऐसी है कि यदि आप बाहर मोटरसाइकिल खड़ी करके घर के अंदर गये तो आपके वापस लौटने तक मोटरसाइकिल गायब हो चुकी होगी। चोर इतने शातिर तरीके से चोरी करते हैं कि आज तक पुलिस तक भी मोटरसाइकिल चोर को नहीं पकड़ सकी।

मिनट भर में हुआ गजब

मेरे साथ भी ऐसा हादसा हो गया। मैंने नई-नई क्लीनिक शुरू की थी। क्लीनिक के ज़रूरी काम से एक कंप्यूटर सेन्टर पर गया था। यह सेन्टर बाज़ार में थोड़ा अंदर की गली में है। मैं बाइक को बाज़ार के द्वार के ठीक सामने ताला लगाकर खड़ा करके अंदर गया और इस डर से कि यह चोरी न हो जाये, गली में से भी इस पर नज़र रखे रहा। कंप्यूटर ऑपरेटर से एक स्पेलिंग ठीक कराने के लिए मात्र मिनट भर के लिए उसके पास गया। इतने में ही गजब हुआ, वापस लौटा तो बाइक अपने स्थान पर नहीं थी। मेरे तो जैसे होश ही उड़ गये। मैं बाहर की ओर दौड़ा, चारों तरफ देखा, आस-पास के दुकानदारों से पूछा पर सब व्यर्थ। करीब आधे घंटे तक आस-पास की गलियों में बाइक की तलाश में दौड़ता रहा लेकिन कहीं कोई अता-पता नहीं मिला।

बाबा के कमरे में जाकर बैठ गई

इतने में युगल (पत्नी) का फोन आ गया कि घर आ जाओ, गैस का सिलेण्डर खत्म हो गया है, खाना भी नहीं बना है, बेटा (4 वर्ष) दूध पीने की जिद्द कर रहा है, सिलेण्डर खत्म होने के कारण दूध भी गर्म नहीं हो पाया है। मैं फोन पर बाइक चोरी होने की बात बताने की हिम्मत न कर सका और पैदल ही घर की ओर चल दिया। हाँ, इस बीच मैंने अपने छोटे भाई को जो पेशे से टीचर है, सारी बात बता दी। उसने कहा कि वह तुरंत ही घर पहुँच रहा है। मैं घर पहुँचा, बच्चा मुझे पैदल आता देख बोला, पापा, बाइक कहाँ है? मैं कुछ नहीं बोला। तभी युगल बोली, बाइक छोटा भाई ले गया है क्या? उन दिनों छोटे भाई की शादी के मात्र दस दिन शेष थे, पत्नी ने सोचा, शायद वो किसी काम के लिए बाइक माँग कर ले गया होगा। जब मैंने बताया कि बाइक चोरी हो गई है तो दो मिनट के लिए सन्नाटा छा गया। युगल कुछ बोले बगैर बाबा के कमरे में जाकर बैठ गई। साइंस का स्टूडेंट होने के कारण मेरा इन सब बातों पर ज्यादा विश्वास नहीं था। मैं सोच रहा था कि योग करने से क्या बाइक मिल जायेगी? हाँ, तनाव इतना ज्यादा था कि मैं चार गिलास पानी पीता चला गया।

बाइक खुले लॉक के साथ वहीं खड़ी थी

करीब 10 मिनट के योग के बाद ये उठी और बोली, जाओ, बाइक जहाँ से गई है, वहीं जाकर देखो और यदि मिल जाये तो मुझे फोन जरूर कर देना। मैं मन ही मन हँसा और सोचने लगा कि चोर इतना ही शरीफ होता तो बाइक ही क्यों ले जाता। लेकिन मुझे सिलेण्डर लेने तो जाना ही था इसलिए मैं मार्केट की ओर पैदल ही चल पड़ा। जहाँ से बाइक चोरी हुई थी, वहाँ जाने की मेरी इच्छा तो नहीं थी लेकिन इन्होंने यह बात इतने विश्वास से कही थी कि पाँव उस स्थान की ओर स्वत: ही चल दिये। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने अपनी बाइक को उस स्थान से कुछ दूरी पर खुले लॉक के साथ खड़े देखा। मेरी खुशी की हद न रही। मेरी आँखों से आँसू निकल रहे थे। मैं कोटि-कोटि बाबा को धन्यवाद कर रहा था। मैंने फोन करके तुरंत ही युगल को सूचना दी और बाइक लेकर घर की ओर चल पड़ा। घर पर छोटा भाई मुझे बाइक के साथ देखकर आश्चर्यचकित था। मैंने उसे सारी बात बताई।

मैंने जब उनसे इस चमत्कार जैसी

घटना के बारे में पूछा तो वे बताने लगी कि योग में मैंने बाबा के सामने बाइक ले जाने वाले भाई को इमर्ज किया और कहा, भाई, हमें बाइक की बहुत आवश्यकता है। तो उस भाई ने कहा, बहन, मेरे जीवन में यह पहली बार है कि मैं चोरी की हुई बाइक लौटा रहा हूँ, बहन, मैं बाइक उसी स्थान पर रख रहा हूँ, भाई से कहकर उठवा लो।

ये बातें अविश्वसनीय तो लगती हैं लेकिन सत्य हैं। उस दिन से मैं बाबा का अनन्य भक्त बन गया हूँ और हर वर्ष सपरिवार माउंट आबू शान्तिवन बाबा मिलन को आता हूं। ❖

रहम करें पेट पर

● **सी.एल.बंसल, सेवानिवृत्त ई.टी.ओ., चरखी दादरी**

आज का इंसान भोजन करता नहीं, निगलता है। जिंदगी में इतनी भागदौड़ मच गई है कि वह दो वक्त का खाना भी शांति के साथ नहीं खा सकता है। पौ फटते ही एक तरफ कूकर की सीटी बजने लग जाती है, दूसरी तरफ साहब की मेट्रो का टाइम होने लगता है, बीवी जी के भी स्कूल का समय हो जाता है। उनके एक हाथ में चोटी है और एक हाथ में रोटी। बच्चे तो मेगी खाकर ही काम चला लेते हैं। दिनचर्या में से समय निकालकर क्या हमने कभी सोचा कि हम जो खाना खा रहे हैं इसका हमारी सेहत पर क्या असर पड़ रहा है? यदि नहीं तो ध्यान दीजिए, हम इस महत्वपूर्ण पहलू में कहाँ खड़े हैं?

अधिक खाने से रोग

कहा गया है, जैसा खाये अन्न वैसा होय मन। यदि स्नेही व्यक्ति के हाथ का बना खाना खाते हैं तो ममता और प्यार का अनुभव होता है। होटल या किसी अन्य स्थान का खाना खाते समय बनाने वाले के विचारों का असर भी पड़ेगा। हमारे देश में जितने रोग भूख से नहीं होते उससे अधिक ज्यादा खाने से होते हैं। आहार-विहार के महत्त्व को नजरअंदाज कर देने से हम जवानी में वह भूल कर जाते हैं जो वृद्धावस्था में शरीर को रोगग्रस्त कर देती है। डाक्टर के पास जाते हैं और डॉक्टर दवाइयों का लिफाफा हमारे पल्ले बाँध देता है। ऊपर से घी नहीं खाना, मीठा या नमक नहीं खाना, दूध को मलाई उतार कर पीना, ये बंदिशें भी लगा देता है। अगर हमने संयम से खाना सीखा होता तो आज ये सब बंदिशें नहीं झेलनी पड़तीं। विदुर-नीति में कहा गया है, धनी लोगों में प्राय भोजन करने की शक्ति नहीं होती किन्तु दरिद्रों के पेट में काठ भी पच जाते हैं। प्रसन्नता व सेहत के लिये अनिवार्य है कि हम अति भोजन से बचें। शरीर के तापमान से अधिक ठंडा, अधिक गर्म, बासी व झूठा भोजन न लें। भोजन का संबंध ऋतुओं से भी होता है और कर्म की श्रेणी से भी। वर्षा काल व ग्रीष्मकाल में पाचन शक्ति सर्दियों की अपेक्षा क्षीण रहती है। श्रम करने वाला व्यक्ति, कुर्सी पर बैठने वाले की भेंट में भोजन को जल्दी पचा पाता है।

स्वस्थ उदर, स्वस्थ जीवन

हमारे स्वस्थ जीवन का आधार है स्वस्थ उदर। रोगों का कारण है पेट की खराबी। यह खराब तब होता है जब हम खान-पान में लापरवाही बरतते हैं। जिस समय भोजन करते हैं उस समय ध्यान सिर्फ भोजन में ही हो। भोजन करते समय टी. वी. न देखें। मोबाइल फोन बंद कर दें। भोजन में यदि कोई कमी हो तो घरवालों पर उस समय क्रोध न करें, बाद में बतायें। पाश्चात्य भौतिक शैली की नकल के चक्कर में हमने बहुत कुछ खोया है। आज हम सुपाच्य और सात्विक भोजन की जगह फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक को महत्त्व देते हैं। चूरमा, हलवा, खीर आदि के स्वाद को हम भूलते जा रहे हैं। जिस माँस को चील, कौआ, गीदड़, सियार व हिंसक पशु खाते हैं वह आज मनुष्य के पेट को श्मशान बना रहा है। अंत में आपसे यही प्रार्थना करता हूँ कि माल पराया हो सकता है पर पेट तो अपना ही है, इस पर रहम करें, नहीं तो रोगग्रस्त होकर पता नहीं कब हम मुँह के स्वाद को भूल जायें। ❖

आखिर संगठन की आवश्यकता क्यों?

● ब्रह्माकुमार अतुल पाटिल, जामनेर (महा.)

एक बार खरगोश और कछुए में 'कौन अधिक तेज़ है', इस बात पर झगड़ा चलता है। झगड़ा मिटाने के लिए एक दिन दोनों में कुछ दूरी तक रेस लगती है। देखते ही देखते खरगोश बहुत आगे निकल जाता है। जब देखता है कि कछुआ अभी बहुत पीछे है, तब पेड़ के नीचे आराम करने लगता है। आराम करते-करते सो जाता है। फिर कछुआ धीरे-धीरे चलते खरगोश से आगे निकल रेस जीत लेता है। खरगोश की आँखें खुलीं तो पता चला कि वह रेस हार चुका है। **भावार्थ:** संयम और नियम से जीवन में सफलता मिलती है।

उपरोक्त कहानी सुनकर ही हम सब बड़े हुए हैं लेकिन एक नई कहानी में खरगोश और कछुआ ज्ञानी बन चुके हैं। खरगोश हार के कारण बहुत उदास होता है। वह ज्ञान के आधार पर चिंतन करता है और महसूस करता है कि वह रेस इसलिए हारा क्योंकि वह अभिमानी और आलसी था। खुद के गुणों और अवगुणों को परखकर वह पुन: कछुए को रेस के लिए आमंत्रित करता है और इस बार आसानी से जीत जाता है। **भावार्थ:** परखने और स्व-परिवर्तन करने से पिछली हार, विजय में बदली जा सकती है।

कहानी यहीं खत्म नहीं होती। इस बार कछुआ अपनी हार की चेकिंग करता है और इस निर्णय पर पहुँचता है कि इस प्रकार की रेस में वह खरगोश को कभी हरा नहीं पायेगा। कुछ सोचने के बाद वह एक नई प्रकार की रेस के लिए खरगोश को आमंत्रित करता है जिसमें तालाब को पार करके रेस खत्म होनी है। रेस शुरू हुई, खरगोश काफी आगे निकल गया लेकिन तालाब के पास जाकर सोचने लगा कि इसे पार कैसे किया जाये। थोड़ी देर में कछुआ आ पहुँचा, खरगोश की तरफ देख मुसकराया, तालाब में उतरा और तैरते-तैरते पार हो गया। खरगोश रेस अधूरी छोड़कर चला गया। **भावार्थ:** पहले अपनी क्षमता को परखो फिर विचार मंथन कर क्षमता के अनुसार स्पर्धा चुनो।

कहानी अभी भी खत्म नहीं होती। इस बार खरगोश और कछुए में स्नेह उत्पन्न हो जाता है। अब दोनों मिलकर चिंतन करने लगते हैं और महसूस करते हैं कि जीतने के बाद भी उन्हें सिर्फ अल्पकाल की खुशी मिलती है। वे जीतने से ज्यादा दूसरे को हराने का ही ख्याल करते हैं। इस कारण खुशी चिरकाल नहीं चलती, पुन: हार का सामना करना पड़ता है।

अब दोनों आखिरी रेस ऐसी करना चाहते हैं जिसमें दोनों दौड़ेंगे लेकिन

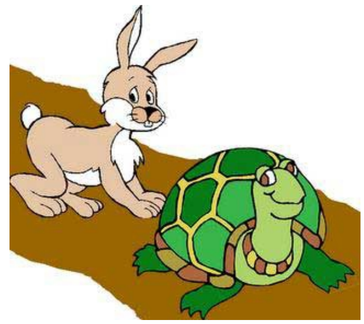

संगठन में। रेस शुरू होती है और इस बार खरगोश कछुए का हाथ पकड़कर दौड़ता है। तालाब के किनारे पहुँचने पर कछुआ खरगोश को पीठ पर लेकर, तैर कर तालाब पार करता है और रेस खत्म होती है। रेस खत्म होते ही दोनों को सच्ची रूहानी खुशी और स्थायी जीत की अनुभूति होती है। इससे दोनों को एक बात समझ में आई कि संगठित होकर वे अपने आप को किसी भी आपत्ति से या किसी भी शिकारी से बचा सकते हैं।

भावार्थ: यह तो अच्छा है कि हर कोई अपने आप में होशियार है और भरपूर क्षमता वाला है लेकिन जब हम संगठन में नहीं रहते, इकट्ठे कार्य नहीं करते तब तक हमें औरों की प्रतिभा नज़र नहीं आती, उनसे कुछ नया नहीं सीख पाते। कई बार, कोई गुण जो अपने में कम हो, वह दूसरों में ज्यादा मात्रा में हो सकता है। इस दुखधाम में अंतिम घड़ी में हमारे सामने ना जाने किस तरह की आपत्ति आ जाये, तो हमें भी उस दुख सागर में तैरने के लिए संगठन की आवश्यकता है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org